سلسلة

الفتح الرباني

# فَتْحُ الرَّحْمَن

## فى تعليم كلمات القرآن

جمع وإعداد

عرب القرآن

للنصيحة والاستفسار

٠١١١١٨٧٧٠٧٧ & ٠١١١٦٠٥٦٦٣٣ & ٠١١١٣٩٦٦٦٠٩

الطبعة الأولى

١٤٣٣ هـ / ٢٠١٢ م

رقم الإيداع

٢٠١٠/١٩١٩٢

# بسم الله الرحمن الرحيم

## مقدمة

الحمد لله رب العالمين والصلاة والسلام علي أشرف الأنبياء والمرسلين سيدنا ونبينا محمد وعلي آله وصحبه أجمعين.

وبعد،،

فإن الله تبارك وتعالى يصطفي من عباده من يقوم بخدمة كتابه، فمن آن لآنٍ يظهر من الطرق ما ييسر الله به تلاوة القرآن، وفي هذا الكتاب جمع بين أصول علم التجويد التي منّ الله بها على علمائنا قديما وبين الأفكار التي أنعم الله بها على بعض عباده حديثا، فالكتاب بأجزائه ينتقل بالمتعلم من إحكام النطق بكل حرف على حدته بجميع حالاته إلى إحكامه حالة التركيب فمن أحكم صحة اللفظ حالة التركيب حصل حقيقة التجويد بالإتقان والتدريب ويستخدم في ذلك أسلوب تهجي الكلمات فيساعد المتعلم على حفظ مقادير الحركات والمدود والسكنات حتى لا يكون واضعا للحرف موضع الحركة، ثم ينتقل بالمتعلم إلى إتقان أحكام التجويد نظريا وعمليًا باستخدام أسلوب تهجي الأحكام فجمع بين التنظير والتطبيق فكان مناسبًا لجميع المستويات والأعمار، والكتاب يعتمد في تعليم القراءة علي الكلمات القرآنية وفي تهجي الأحكام على القواعد اللغوية ليكون خدمة للقرآن والعربية في آن.

وهذا الكتاب ( فتح الرحمن في تعليم كلمات القرآن ) واحد من مجموعة كتب لمنهج طبق في كثير من الدول العربية وغيرها وقد حقق بفضّل الله نجاحا كبيرا حتى أن الأطفال قبل سن السادسة تعلموا القراءة والكتابة وتلاوة القرآن بالأحكام لعلها تكون بداية لتدبر آيات القرآن والعمل به وتبليغه.

فالحمد لله علم القرآن، ومنّ علينا بنور البيان، فاللهم يا معلم آدم ومفهم سليمان، بارك لنا يا ربنا في هذا التبيان، واكتب لنا جميعًا التوفيق والقبول وحسن الختام.

عرب القرآن

## أخي المعلم:

١. لنحرص دائما أن نقصد بهذا العمل الأجر من الله تعالى ولتكن نيتنا في تعليم القراءة تنفيذ أول أمر في كتاب الله عز وجل ﴿ ٱقۡرَأۡ بِٱسۡمِ رَبِّكَ ٱلَّذِى خَلَقَ ﴾.

٢. لتكن بدايتنا في كل حصة «بسم الله والحمد لله والصلاة والسلام على رسول الله ﷺ وفي نهاية كل حصة «سبحانك اللهم وبحمدك أشهد ألا إله إلا أنت أستغفرك وأتوب إليك».

٣. لنحرص على ابتسامتنا في وجه الطفل ولنكن رحماء به ونتجنب الضرب، وإذا أخطأ الطفل نعوِّده أن يقول «استغفر الله» ولنحرص دائما على الدعاء لأطفال المسلمين ولنتسم بالرفق واللين في معاملتهم ولا نقارن طفلًا ضعيفًا بغيره أو نعيره بضعفه.

٤. لنكن حريصين على غرس حب الله وحب رسوله ﷺ في نفوس الأطفال بكثرة ذكر الله وذكر نعمه علينا وكثرة ذكر رسول الله ﷺ ورحمته وعطفه وحبه للأطفال.

٥. لنتذكر دائما أن المعلم هو القدوة للطفل فلنحرص على مظهرنا الإسلامي والتخلق بأخلاق الإسلام في كل شيء: (الحرص على الوقت، نظافة المكان، حسن معاملة الطفل والآخرين، اختيار الألفاظ الحسنة).

٦. لنهتم بجميع الجوانب:(عقيدة الطفل، سلوكه، جسمه، حقه في اللعب) مع تعليمه.

٧. التأكيد على لغة الحوار بين المعلم والطفل.

٨. عند تقديم حرف جديد أو كلمة جديدة أو آية يراعى الآتي:

أ. يستمع المتعلم إلى النطق النموذجي من المعلم عدة مرات.

ب. يقوم الأطفال بالترديد خلف المعلم عدة مرات.

ج. يقسم الأطفال إلى مجموعات تردد كل مجموعة عدة مرات.

د. يستمع المعلم من كل طفل بمفرده مع تشجيعه للطفل.

هـ. ضرورة الإشارة إلى الحرف أو الكلمة أثناء النطق.

# حروف الهجاء

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ا<br>ألف | ء<br>همزة | ب<br>باء | ت<br>تاء | ث<br>ثاء |
| ج<br>جيم | ح<br>حاء | خ<br>خاء | د<br>دال | ذ<br>ذال |
| ر<br>راء | ز<br>زاى | س | ش<br>شين | ص<br>صاد |
| ض<br>ضاد | ط<br>طاء | ظ<br>ظاء | ع<br>عين | غ<br>غين |
| ف<br>فاء | ق<br>قاف | ك<br>كاف | ل<br>لام | م<br>ميم |
| ن<br>نون | هـ<br>هاء | و<br>واو | يـ<br>ياء | ى<br>ياء |

حروف لثوية — حروف تفخيم — حروف تدور بين التفخيم والترقيق — حرف لثوي ومفخم

١. يُكتب حرف الألف بدون همزة وإذا كتبت الهمزة فوقه تسمى همزة أو ألف همزة فالهمزة لها عدة أشكال هي:

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| أ | | ئ | ـئ | ء | إ | ٱللُّؤْلُؤِ | ٱلسَّيِّئِ | أُوْلَـٰٓئِكَ | بِـَٔايَةٍ | لَأٓيَةً | فَٱدَّٰرَٰٔتُمْ |

# الحروف بالفتح

| | | | |
|---|---|---|---|
| أَ | بَ | تَ | ثَ |
| جَ | حَ | خَ | دَ |
| ذَ | رَ | زَ | سَ |
| شَ | صَ | ضَ | طَ |
| ظَ | عَ | غَ | فَ |
| قَ | كَ | لَ | مَ |
| نَ | هَ | وَ | يَ |

حروف لثوية — حروف تفخيم — حرف لثوي ومفخم

١. تنطق الحروف مباشرة دون تركيز على ذكر اسم الحرف ويراعى عدم مد الحركة حتى لا يتولد منها حرف مد.

٢. يراعى نطق الحروف المفخمة:(خَ – صَ – ضَ – طَ – ظَ – غَ – قَ).

٣. يراعى تفخيم الراء لأنها مفتوحة. ويراعى أيضًا مخرج (ثَ – ذَ – ظَ).

| | | | |
|---|---|---|---|
| أَ | بَ | تَ | ثَ |
| أَ - أَ<br>ءَأَ | أَ - بَ<br>أَبَ | أَ - تَ<br>أَتَ | أَ - ثَ<br>أَثَ |
| بَ - أَ<br>بَأَ | بَ - بَ<br>بَبَ | بَ - تَ<br>بَتَ | بَ - ثَ<br>بَثَ |
| تَ - أَ<br>تَأَ | تَ - بَ<br>تَبَ | تَ - تَ<br>تَتَ | تَ - ثَ<br>تَثَ |
| ثَ - أَ<br>ثَأَ | ثَ - بَ<br>ثَبَ | ثَ - تَ<br>ثَتَ | ثَ - ثَ<br>ثَثَ |

١. يفضل عدم التقيد بترتيب الحروف عند سؤال الأطفال عنها بعد الانتهاء من تمكينها.

٢. بعد تمكين كل حرف بمفرده يتم تجميع كل حرفين معًا هكذا: ( أَ – أَ – ءَ أَ ) ( أَ – بَ – أَبَ ) (أَ – تَ – أَتَ ) ( أَ – ثَ – أَثَ ) ثم تنطق التجميعات فقط مباشرةً هكذا ( أَأَ –أَبَ –أَتَ –أَثَ )، ويمكن اتباع نفس الخطوات عموديًّا أو الاكتفاء بالقراءة المباشرة هكذا ( ءَأَ – بَأَ – تَأَ – ثَأَ ) مع ضرورة إنهاء الحصة بالقراءة المباشرة أفقيًّا وعموديًّا، ويتبع نفس الأسلوب حتى يتم الانتهاء من تمكين جميع الحروف بالفتح.

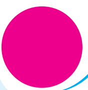


جَ    حَ    خَ

| | | | |
|---|---|---|---|
| جَ | جَ - جَ - جَجَ | جَ - حَ - جَحَ | جَ - خَ - جَخَ |
| حَ | حَ - جَ - حَجَ | حَ - حَ - حَحَ | حَ - خَ - حَخَ |
| خَ | خَ - جَ - خَجَ | خَ - حَ - خَحَ | خَ - خَ - خَخَ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| أَ | أَأَ | أَبَ | أَتَ | أَثَ | أَجَ | أَحَ | أَخَ |
| بَ | بَأَ | بَبَ | بَتَ | بَثَ | بَجَ | بَحَ | بَخَ |
| تَ | تَأَ | تَبَ | تَتَ | تَثَ | تَجَ | تَحَ | تَخَ |
| ثَ | ثَأَ | ثَبَ | ثَتَ | ثَثَ | ثَجَ | ثَحَ | ثَخَ |
| جَ | جَأَ | جَبَ | جَتَ | جَثَ | جَجَ | جَحَ | جَخَ |
| حَ | حَأَ | حَبَ | حَتَ | حَثَ | حَجَ | حَحَ | حَخَ |
| خَ | خَأَ | خَبَ | خَتَ | خَثَ | خَجَ | خَحَ | خَخَ |

بعد تمكين كل حرف بمفرده يتم تجميع مجموعة الحروف الجديدة معًا ثم يتم تجميعها مع كل الحروف التي سبق تمكينها كما هو مبين في الجدول .








دَ ذَ رَ زَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| دَ | دَ - دَ - ددَ | دَ - ذَ - دذَ | دَ - رَ - درَ | دَ - زَ - دزَ |
| ذَ | ذَ - دَ - ذدَ | ذَ - ذَ - ذذَ | ذَ - رَ - ذرَ | ذَ - زَ - ذزَ |
| رَ | رَ - دَ - ردَ | رَ - ذَ - رذَ | رَ - رَ - ررَ | رَ - زَ - رزَ |
| زَ | زَ - دَ - زدَ | زَ - ذَ - زذَ | زَ - رَ - زرَ | زَ - زَ - ززَ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| أَ – حَـ | أَحَـ | دَ | أَحَدَ |
| أَ – خَـ | أَخَـ | ذَ | أَخَذَ |
| ذَ – رَ | ذَرَ | أَ | ذَرَأَ |
| بَ – رَ | بَـرَ | زَ | بَـرَزَ |
| حَـ – ذَ | حَـذَ | رَ | حَـذَرَ |

١. طريقة تهجى الكلمات: ينطق الحرف الأول بمفرده ( أَ ) ثم الثاني بمفرده (حَـ) ثم يتم تجميع الحرفين معًا (أَحَـ) ثم ينطق الحرف الثالث بمفرده ( دَ ) ثم تجميع الأحرف الثلاثة (أَحَدَ) ( أَ – حَـ – أَحَـ – دَ – أَحَدَ ).

٢. مراعاة تفخيم الخاء فقط في كلمة (أَخَـذَ)، و تفخيم الراء فقط في ( ذَرَأَ – بَـرَزَ– حَذَرَ ).

سَ شَ صَ ضَ

| | | | |
|---|---|---|---|
| سَـ - جَـ | سَجَـ | دَ | سَجَدَ |
| شَـ - جَـ | شَجَـ | رَ | شَجَرَ |
| حَـ - سَـ | حَسَـ | دَ | حَسَدَ |
| ضَـ - رَ | ضَرَ | بَ | ضَرَبَ |
| صَـ - بَـ | صَبَـ | رَ | صَبَرَ |

طَ ظَ عَ غَ

| | | | |
|---|---|---|---|
| بَـ - سَـ | بَسَـ | طَ | بَسَطَ |
| عَـ - بَـ | عَبَـ | دَ | عَبَدَ |
| بَـ - عَـ | بَعَـ | ثَ | بَعَثَ |
| عَـ - شَـ | عَشَـ | رَ | عَشَرَ |

طريقة التهجي: (سَـ - جَـ - سَجَـ - دَ - سَجَدَ) وهكذا مع مراعاة تفخيم الراء فقط في كلمة (شَـجَـرَ) و ترقيق الباء فقط في (ضَـرَبَ - صَـبَـرَ) خاصة أثناء القراءة المباشرة.
مراعاة تفخيم الطاء فقط في كلمة (بَسَـطَ) و تفخيم الراء فقط في كلمة (عَـشَـرَ).



فَ قَ كَ لَ

| | | | |
|---|---|---|---|
| أَ – فَ | أَفَ | لَ | أَفَلَ |
| أَ – بَ | أَبَ | قَ | أَبَقَ |
| شَ – كَ | شَكَ | رَ | شَكَرَ |
| أَ – كَ | أَكَ | لَ | أَكَلَ |

مَ نَ هَ وَ ىَ

| | | | |
|---|---|---|---|
| حَ – كَ | حَكَ | مَ | حَكَمَ |
| نَ – بَ | نَبَ | أَ | نَبَأَ |
| جَ – هَ | جَهَ | رَ | جَهَرَ |
| يَ – دَ | يَدَ | كَ | يَدَكَ |

طريقة التهجي: (حَـ – كَـ – حَكَ – مَ – حَكَمَ). ويراعى تفخيم الراء فقط في كلمة (جَهَرَ) مع التركيز على مخرج الجيم وترقيق الهاء (جَـ – هَـ – جَهَ – رَ – جَهَرَ).



## تدريبات على تجميع الحروف المرققة مع الحروف المفخمة

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| أَخَ | أَصَ | أَضَ | أَطَ | أَظَ | أَغَ | أَقَ | أَرَ |
| بَخ | بَص | بَض | بَط | بَظ | بَغ | بَق | بَر |
| تَخ | تَص | تَض | تَط | تَظ | تَغ | تَق | تَر |
| عَخ | عَص | عَض | عَط | عَظ | عَغ | عَق | عَر |
| فَخ | فَص | فَض | فَط | فَظ | فَغ | فَق | فَر |
| مَخ | مَص | مَض | مَط | مَظ | مَغ | مَق | مَر |
| نَخ | نَص | نَض | نَط | نَظ | نَغ | نَق | نَر |
| وَخ | وَص | وَض | وَط | وَظ | وَغ | وَق | وَر |
| يَخ | يَص | يَض | يَط | يَظ | يَغ | يَق | يَر |

| | | |
|---|---|---|
| تَـ - رَ - تَـرَ | عَـ - سَـ - عَسَ | صَـ - دَ - صَـدَ |
| طَ - رَ - طَـرَ | عَـ - صَـ - عَصَ | صَـ - ضَ - صَضَ |

التهجي: (تَـ - رَ - تَرَ، طَ - رَ - طَرَ)، (تَرَ - طَرَ) (عَـ - سَـ - عَسَ، عَـ - صَـ - عَصَ)، (عَسَ - عَصَ)
(صَـ - دَ - صَـدَ، صَـ - ضَـ - صَضَ)، (صَـدَ - صَضَ)

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَجَدَ | وَعَدَ | حَسَدَ | عَدَدَ |
| القصص: ٢٣ | الحديد: ١٠ | الفلق: ٥ | المؤمنون: ١١٢ |
| كَتَبَ | كَسَبَ | ذَهَبَ | كَذَبَ |
| الحشر: ٣ | المسد: ٢ | القيامة: ٣٣ | النجم: ١١ |
| نَزَلَ | سَأَلَ | حَمَلَ | عَمَلَ |
| الحديد: ١٦ | المعارج: ١ | طه: ١١١ | آل عمران: ١٩٥ |
| كَتَمَ | عَزَمَ | زَعَمَ | حَكَمَ |
| البقرة: ١٤١ | محمد: ٢١ | التغابن: ٧ | غافر: ٤٨ |
| وَلَدَ | نَبَذَ | سَلَفَ | كَشَفَ |
| البلد: ٣ | البقرة: ١٠١ | البقرة: ٢٧٥ | النحل: ٥٤ |

يفضل قراءة الكلمات مباشرة (وَجَدَ) أو تهجى الثلاثة أحرف معًا: (وَ - جَـ - دَ - وَجَدَ) فإن لم يستطع المتعلمُ يتبع الأسلوب الأول: (وَ - جَـ - وَجَـ - دَ - وَجَدَ) ثم ينتهي بالقراءة المباشرة.

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| أَمَرَ<br>العلق: ١٢ | مَكَرَ<br>النحل: ٢٦ | بَلَغَ<br>الأحقاف: ١٥ | نَزَغَ<br>يوسف: ١٠٠ |
| غَضَبَ<br>النور: ٩ | ضَرَبَ<br>التحريم: ١٠ | وَرَدَ<br>القصص: ٢٣ | بَسَطَ<br>الشورى: ٢٧ |
| خَتَمَ<br>الجاثية: ٢٣ | ظَلَمَ<br>الطلاق: ١ | عَرَضَ<br>النور: ٣٣ | فَرَضَ<br>التحريم: ٢ |
| تَرَكَ<br>فاطر: ٤٥ | سَرَقَ<br>يوسف: ٧٧ | فَصَلَ<br>البقرة: ٢٤٩ | رَفَثَ<br>البقرة: ١٩٧ |
| مَرَجَ<br>الرحمن: ١٩ | صَرَفَ<br>التوبة: ١٢٧ | شَرَحَ<br>الزمر: ٢٢ | صَلَحَ<br>غافر: ٨ |

مراعاة تفخيم الراء فقط في أَمَـرَ، مَـرَجَ، شَـرَحَ، وَرَدَ، وتفخيم الطاء فقط في بَسَـطَ والصاد فقط في فَصَلَ، صَلَحَ.

# تدريب ٣

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَقَعَ<br>النمل: ٨٢ | طَبَعَ<br>محمد: ١٦ | شَرَعَ<br>الشورى: ١٣ | رَفَعَ<br>النازعات: ٢٨ |
| حَضَرَ<br>المائدة: ١٠٦ | نَظَرَ<br>المدثر: ٢١ | جَهَرَ<br>الرعد: ١٠ | ظَهَرَ<br>الروم: ٤١ |
| فَخَلَفَ<br>مريم: ٥٩ | وَصَدَفَ<br>الأنعام: ١٥٧ | وَقَذَفَ<br>الحشر: ٢ | وَخَسَفَ<br>القيامة: ٨ |
| وَسَلَكَ<br>طـه: ٥٣ | وَقَعَدَ<br>التوبة: ٩٠ | وَزَهَقَ<br>الإسـراء: ٨١ | وَوَضَعَ<br>الرحمن: ٧ |
| فَمَكَثَ<br>النمل: ٢٢ | فَخَرَجَ<br>المائدة: ١٠٦ | فَحَشَرَ<br>النازعات: ٢٣ | وَذَكَرَ<br>الأعلى: ١٥ |

مراعاة ترقيق الحاء فقط في حَـضَـرَ، وتفخيم الصاد فقط في وَصَدَفَ، وترقيق الهاء في ظَـهَـرَ، جَهَرَ. وتفخيم الراء فقط في فَحَشَرَ ، وَذَكَرَ.

# الحروف بالكسر

| | | | |
|---|---|---|---|
| إِ | بِ | تِ | ثِ |
| جِ | حِ | خِ | دِ |
| ذِ | رِ | زِ | سِ |
| شِ | صِ | ضِ | طِ |
| ظِ | عِ | غِ | فِ |
| قِ | كِ | لِ | مِ |
| نِ | هِ | وِ | يِ |

حروف لثوية — حروف تفخيم — حرف لثوي ومفخم

١. بيان أن الكسرة خط صغير مائل يوضع تحت الحرف وأن لبعض الحروف أشكال مختلفة دون فارق في النطق.

٢. بيان خفض الفك السفلى عند النطق بحرف مكسور مع ضبط مقدار الحركة حتى لا يتولد منها حرف مد.

| جِـ | تِـ | بِـ | إِ |
|---|---|---|---|

| أَ - جِـ - دَ | خَـ - لَـ - تِ | حَـ - بِـ - طَ | إِ - رَ - مَ |
|---|---|---|---|
| أَجِدَ | خَلَتِ | حَبِطَ | إِرَمَ |

| ـذِ | دِ | خِـ | حِـ |
|---|---|---|---|

| أَ - ذِ - نَ | رَ - دِ - فَ | سَـ - خِـ - طَ | رَ - حِـ - مَ |
|---|---|---|---|
| أَذِنَ | رَدِفَ | سَخِطَ | رَحِمَ |

| شِـ | سِـ | ـزِ | رِ |
|---|---|---|---|

| خَـ - شِـ - يَ | حَـ - سِـ - بَ | تَـ - ـزِ - دِ | بَـ - رِ - قَ |
|---|---|---|---|
| خَشِيَ | حَسِبَ | تَزِدِ | بَرِقَ |

١. بعد تمكين الحرف بالكسر نقارن بين الفتح والكسر ثم نبدأ في تقديم الكلمة:
(إِ – رَ – إِرَ – مَ – إِرَمَ) أو (إِ – رَ – مَ – إِرَمَ) وهكذا مع كل الحروف.

٢. بعد الانتهاء من تقديم كلمات كل مجموعة تتم قراءتها مباشرة في نهاية الدرس.

ضِ طِ عِ

| | | |
|---|---|---|
| رَ-ضِ-يَ | خَ-طِ-فَ | مَ-عِ-يَ |
| رَضِىَ | خَطِفَ | مَعِىَ |

فِ قِ كِ لِ

| | | | |
|---|---|---|---|
| حَ-فِ-ظَ | بَ-قِ-يَ | مَ-لِ-كَ | عَ-لِ-مَ |
| حَفِظَ | بَقِىَ | مَلِكَ | عَلِمَ |

مِ نِ هِ يِ

| | | | |
|---|---|---|---|
| أَ-مِ-نَ | تَ-رَ-نِ | عَ-هِ-دَ | يَ-دِ-يَ |
| أَمِنَ | تَرَنِ | عَهِدَ | يَدِىَ |

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| رَحِمَ | فَرِحَ | بَخِلَ | تَجِدَ |
| يوسف: ٥٣ | التوبة: ٨١ | الليل: ٨ | النساء: ٥٢ |
| سَخِطَ | لَبِثَ | كَرِهَ | بَقِىَ |
| المائدة: ٨٠ | هود: ٦٩ | الأنفال: ٨ | البقرة: ٢٧٨ |
| بَرِقَ | خَطِفَ | خَسِرَ | سَخِرَ |
| القيامة: ٧ | الصافات: ١٠ | المائدة: ٣ | التوبة: ٧٩ |
| غَضِبَ | شَرِبَ | حَسِبَ | وَسِعَ |
| الفتح: ٦ | البقرة: ٢٤٩ | العنكبوت: ٤ | البقرة: ٢٥٥ |
| يَئِسَ | نَسِىَ | شَهِدَ | سَفِهَ |
| المائدة: ٣ | الزمر: ٨ | البقرة: ١٨٥ | البقرة: ١٣٠ |

١. يفضل قراءة الكلمات مباشرة إذا استطاع المتعلم، فإن لم يستطع فيتهجى الكلمة دون تجميع حرفين: (رَ – حِـ – مَ – رَحِمَ) فإن لم يستطع فيتبع الأسلوب الأول: (رَ – حِـ – رَحِـ – مَ – رَحِمَ) ثم ينتهي بالقراءة المباشرة.

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| يَشَاءِ | أَثَرِ | خَلَتِ | بَدَتِ |
| الشورى: ٢٤ | طـه: ٩٦ | الأحقاف: ١٧ | آل عمران: ١١٨ |
| شِيَةَ | قِبَلَ | عِوَجَ | غَسَقِ |
| هود: ٦٩ | البقرة: ٩١ | طـه: ١٠٨ | الإسراء: ٧٨ |
| فَلِمَ | فَبِمَ | وَلِيَ | وَمِنَ |
| البقرة: ٩١ | الحجر: ٥٤ | الكافرون: ٦ | البقرة: ٨ |
| وَقَعَتِ | بَلَغَتِ | وَعَنَتِ | كَمَثَلِ |
| الواقعة: ١ | الواقعة: ٨٣ | طـه: ١١١ | البقرة: ١٧ |
| قِبَلَكَ | تَبِعَكَ | بِبَدَنِكَ | لِخَزَنَةِ |
| المعارج: ٣٦ | الأعراف: ١٨ | يونس: ٩٢ | غافر: ٤٩ |

# الحروف بالضم

| | | | |
|---|---|---|---|
| أُ | بُ | تُ | ثُ |
| جُ | حُ | خُ | دُ |
| ذُ | رُ | زُ | سُ |
| شُ | صُ | ضُ | طُ |
| ظُ | عُ | غُ | فُ |
| قُ | كُ | لُ | مُ |
| نُ | هُ | وُ | يُ |

حروف لثوية — حروف تفخيم — حرف لثوي ومفخم

١. بيان أن الضمة عبارة عن واو صغيرة توضع فوق الحرف وأهمية ضم الشفتين لنطق الحرف المضموم.

٢. مراجعة الفتح والكسر أثناء تقديم دروس الضم.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| أُ | بُ | تُ | ثُ | جُ |
| أُ-ذِ-نَ | خَ-بُ-ثَ | تُ-طِ-ع | يَ-رِ-ثُ | جُ-عِ-لَ |
| أُذِنَ | خَبُثَ | تُطِع | يَرِثُ | جُعِلَ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| حُ | خُ | دُ | ذُ | رُ |
| حُ-شِ-رَ | خُ-لِ-قَ | تَ-جِ-دُ | ذُ-كِ-رَ | تَ-ذَ-رُ |
| حُشِرَ | خُلِقَ | تَجِدُ | ذُكِرَ | تَذَرُ |

١- بعد تمكين الحروف بالضم نقارن بين الفتح والكسر والضم ثم يتم تقديم الكلمة مع كل حرف (أُ - ذِ - أُذِ - نَ - أُذِنَ) أو (أُ - ذِ - نَ - أُذِنَ) وهكذا مع كل الحروف.

٢- بعد الانتهاء من تقديم كلمات كل مجموعة تتم القراءة المباشرة في نهاية الدرس.

| زُ | سُ | صُ | ضُ | طُ |
|---|---|---|---|---|
| تَ-زِ-رُ | سُ-نَ-نَ | صُ-حُ-فِ | ضُ-رِ-بَ | طُ-بِ-عَ |
| تَزِرُ | سُنَنَ | صُحُفِ | ضُرِبَ | طُبِعَ |

| ظُ | عُ | غُ | فُ | قُ |
|---|---|---|---|---|
| ظُ-لِ-مَ | عُ-ثِ-رَ | غُ-لِ-بَ-تِ | فُ-عِ-لَ | قُ-تِ-لَ |
| ظُلِمَ | عُثِرَ | غُلِبَتِ | فُعِلَ | قُتِلَ |

| كُ | لُ | مُ | نُ | هُ |
|---|---|---|---|---|
| كُ-تِ-بَ | لُ-عِ-نَ | لَ-كُ-مُ | نُ-فِ-خَ | وَ-هُ-وَ |
| كُتِبَ | لُعِنَ | لَكُمُ | نُفِخَ | وَهُوَ |

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| هُدِىَ<br>آل عمران: ١٠١ | نُقِرَ<br>المدثر: ٨ | أُفِكَ<br>الذاريات: ٩ | سُقِطَ<br>الأعراف: ١٤٩ |
| سُئِلَ<br>البقرة: ١٠٨ | قُرِئَ<br>الإنشقاق: ٢١ | ذُبِحَ<br>المائدة: ٣ | تَصِفُ<br>النحل: ١١٦ |
| رُسُلُ<br>الأنعام: ١٢٤ | تَصِلُ<br>هـود: ٧٠ | مَثَلُ<br>آل عمران: ١١٧ | حَصَبُ<br>الأنبياء: ٩٨ |
| يَكُنِ<br>النساء: ٣٨ | كَبُرَ<br>الأنعام: ٣٥ | سُبُلَ<br>النحل: ٦٩ | يُهِنِ<br>الحج: ١٨ |
| وَجُمِعَ<br>القيامة: ٩ | وَنُرِيَ<br>القصص: ٦ | وَوُضِعَ<br>الكهف: ٤٩ | لَقُضِيَ<br>فصلت: ٤٥ |

يفضل قراءة الكلمات قراءة مباشرة (هُدِىَ) فإن لم يستطع المتعلم يمكن أن يتهجى هكذا (هُـ – دِ – ىَ – هُدِىَ) أو هكذا (هُـ – دِ – هُدِ – ىَ – هُدِىَ).

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَنَذَرُ<br>الأعراف: ٧٠ | وَنَضَعُ<br>الأنبياء: ٤٧ | وَيَهَبُ<br>الشورى: ٤٩ | وَحَسُنَ<br>النساء: ٦٩ |
| وَمَثَلُ<br>البقرة: ١٧١ | ءَأَلِدُ<br>هـود: ٧٢ | فَطُبِعَ<br>المنافقون: ٣ | فَبُهِتَ<br>البقرة: ٢٥٨ |
| جَعَلَهُ<br>آل عمران: ١٢٦ | لَعَلِمَهُ<br>النساء: ٨٣ | فَأَخَذَهُ<br>النازعات: ٢٥ | فَأَكَلَهُ<br>يوسف: ١٧ |
| كَلِمَتُ<br>الأنعام: ١١٥ | وَفُتِحَتِ<br>النبأ: ١٩ | لَأَجِدُ<br>التوبة: ٩٢ | أَحَدَهُمُ<br>النساء: ١٨ |
| عَضُدَكَ<br>القصص: ٣٥ | فَبَصَرُكَ<br>ق: ٢٢ | عَمَلُكَ<br>الزمر: ٦٥ | أَعِظُكَ<br>هود: ٤٦ |

# مراجعة على الفتح والكسر والضم

| | | |
|---|---|---|
| أَ إِ أُ | بَ بِ بُ | تَ تِ تُ |
| ثَ ثِ ثُ | جَ جِ جُ | حَ حِ حُ |
| خَ خِ خُ | دَ دِ دُ | ذَ ذِ ذُ |
| رَ رِ رُ | زَ زِ زُ | سَ سِ سُ |
| شَ شِ شُ | صَ صِ صُ | ضَ ضِ ضُ |
| طَ طِ طُ | ظَ ظِ ظُ | عَ عِ عُ |
| غَ غِ غُ | فَ فِ فُ | قَ قِ قُ |
| كَ كِ كُ | لَ لِ لُ | مَ مِ مُ |
| نَ نِ نُ | هَ هِ هُ | وَ وِ وُ |
| | يَ يِ يُ | |

# التدريب على الجمل

| | |
|---|---|
| سَجَدَ فَشَكَرَ | عَبَسَ وَبَسَرَ |
| عَبَدَ وَحَمِدَ | سَفِهَ فَنَدِمَ |
| ذُبِحَ وَأُكِلَ | خَلَقَ وَرَزَقَ |
| وَعَدَ فَصَدَقَ | كَتَبَ وَشَرَحَ |
| خُلِقَ فَعَبَدَ | رَضِيَ وَشَكَرَ |
| أَمَرَ وَشَرَعَ | صَبَرَ وَغَفَرَ |

التهجي: (سَـ – جَـ – سَجَـ – دَ – سَجَدَ – فَـ – شَـ – فَشَـ – كَـ – فَشَكَـ – رَ – فَشَكَرَ – سَجَدَ فَشَكَرَ).
(صَـ – بَـ – صَبَـ – رَ – صَبَرَ – وَ – غَـ – وَغَـ – فَـ – وَغَفَـ – رَ – وَغَفَرَ – صَبَرَ وَغَفَرَ).
ثم القراءة المباشرة في نهاية الحصة.

# المد بالألف

| | | | |
|---|---|---|---|
| بَـا | تَـا | ثَـا | جَـا |
| حَـا | خَـا | دَا | ذَا |
| رَا | زَا | سَـا | شَـا |
| صَـا | ضَـا | طَـا | ظَـا |
| عَـا | غَـا | فَـا | قَـا |
| كَـا | لَا | مَـا | نَـا |
| هَـا | وَا | ءَا | يَـا |

حروف لثوية — حروف تفخيم — حرف لثوي ومفخم

بعد الهمزة فقط يسمى « مد بدل » ومع جميع الحروف يسمى مد طبيعي (ءَ ألف مد بدل حركتان ءَا).

١. الألف مسبوق دائمًا بحرف مفتوح ويتبع ما قبله ترقيقًا وتفخيمًا وهذه الحالة هي أعلى مراتب التفخيم.

٢. تراجع التدريبات على الفتح أثناء دراسة المد بالألف مع مراعاة فتح الفم لبيان الفتح وتجنب الإمالة.

٣. طريقة التهجي: (بَـ – ألف مد طبيعي حركتان بَـا) (تَـ – ألف مد طبيعي حركتان تَـا).

| | | |
|---|---|---|
| بَا | تَا | ثَا |
| بَلِغُ | أَتَـٰك | ثَانِ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| جَا | حَا | خَا | جَىٰ |
| تُجَـٰدِلُ | فَحَاق | يَخَافُ | سَجَىٰ |
| دَا | ذَا | رَا | زَا |
| جِدَالَ | عَذَابُ | صِرَٰط | أَزَاغَ |

١. يتم التركيز على تهجي حكم المد الطبيعي (ألف مد طبيعي حركتان) (بَـ - ألف مد طبيعي حركتان بَا) وبيان أنه مع الهمزة فقط يسمى (ألف مد بدل حركتان) (ءَ - ألف مد بدل حركتان ءَا).

٢. بعد تمكين الحرف يقارن بين الفتح والمد بالألف نطقًا فقط (بَـ - بَا) وهكذا ثم تقدم الكلمة وبعد تقديم كلمات كل مجموعة تقرأ مباشرة في نهاية الدرس.

٣. بيان رسم الألف الصغيرة (بَٰلِغُ) والألف اللينة (سَجَىٰ).

سَا شَا صَا ضَا

مَسَٰجِدَ عِشَارُ أَصَابَ يُضَٰعَفُ

طَا ظَا عَا غَا

فَطَافَ عِظَٰمَ طَعَامِ بِغَالَ

فَا قَا كَا لَا

فَاطِرِ مُقَامَ فَكَانَ وَلَاتَ

مَا نَا هَا وَا يَا

وَنَمَارِقُ فَنَادَىٰ لِهَٰذَا وَكَوَاعِبَ غَيَٰبَتِ

يراعى ترقيق الهمزة في (أَصَابَ) والفاء في (فَطَافَ – فَاطِرِ) والعين في (طَعَامِ)

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| تَابَ<br>المائدة: ٧١ | طَابَ<br>النساء: ٣ | خَابَ<br>طـه: ٦١ | خَافَ<br>البقرة: ١٨٢ |
| قَالَ<br>البقرة: ٣٠ | نَكَالَ<br>النازعات: ٢٥ | رَانَ<br>المطففين: ١٤ | أَصَابَ<br>هـود: ٨٩ |
| نَارٌ<br>الهمزة: ٦ | نَاقَةٌ<br>الأعراف: ٧٣ | مَتَٰعُ<br>آل عمران: ١٤ | عَذَابٌ<br>البروج: ١٠ |
| أَتَىٰكَ<br>الغاشية: ١ | ذَاتَ<br>الأنفال: ١ | أَبَانَا<br>يوسف: ٨ | دَعَانَا<br>يونس: ١٢ |
| فَطَافَ<br>القلم: ١٩ | فَحَاقَ<br>الأنعام: ١٠ | يُحَاطَ<br>يوسف: ٦٦ | جَوَابَ<br>الأعراف: ٨٢ |
| مَٰلِكَ<br>آل عمران: ٢٦ | فَاطِرِ<br>الأنعام: ١٤ | مَالِ<br>الفرقان: ٧ | طَعَامِ<br>الماعون: ٣ |

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| ثَلَـٰثَ<br>مريم: ١٠ | ثَمَـٰنِىَ<br>القصص: ٢٧ | تُجَـٰدِلُ<br>النحل: ١١١ | بَـٰلِغُ<br>الطلاق: ٣ |
| تَلَـٰهَا<br>الشمس: ٢ | بَنَـٰهَا<br>الشمس: ٥ | طَحَـٰهَا<br>الشمس: ٦ | وَضُحَـٰهَا<br>الشمس: ١ |
| مَابَالُ<br>يوسف: ٥٠ | يَـٰجِبَالُ<br>سبأ: ١٠ | لَايَخَافُ<br>الشمس: ١٥ | وَنَتَجَاوَزُ<br>الأحقاف: ١٦ |
| خَلَـٰقَ<br>الأحزاب: ١٣ | جِدَالَ<br>البقرة: ١٩٧ | مُقَامَ<br>الأحزاب: ١٣ | وَكَوَاعِبَ<br>النبأ: ٣٣ |
| شَانِئَكَ<br>البقرة: ١١٤ | نُدَاوِلُهَا<br>آل عمران: ١٤٠ | خُطُوَٰتِ<br>الأنعام: ١٤٢ | وَنَمَارِقُ<br>الغاشية: ١٥ |
| وَسَعَىٰ<br>الكوثر: ٣ | فَعَصَىٰ<br>المزمل: ١٦ | فَنَادَىٰ<br>النازعات: ٢٣ | إِذَاسَجَىٰ<br>الضحى: ٢ |

# المد بالياء

| | | | |
|---|---|---|---|
| بِي | تِي | ثِي | جِي |
| حِي | خِي | دِي | ذِي |
| رِي | زِي | سِي | شِي |
| صِي | ضِي | طِي | ظِي |
| عِي | غِي | فِي | قِي |
| كِي | لِي | مِي | نِي |
| هِي | وِي | إِي | يِي |

حروف لثوية　　حروف تفخيم　　حرف لثوي ومفخم

١. بيان أن الياء المدية تسبق بحرف مكسور مع مراعاة خفض الفك السفلي لتحقيق الكسرة والمد بالياء.

٢. تراجع التدريبات على الكسر أثناء دراسة المد بالياء.

٣. طريقة التهجي: (بِـ ياء مد طبيعي حركتان بِي).

بعد كل الحروف يسمى « مد طبيعي » وبعد الهمزة يسمى « مد بدل » (إِ ياء مد بدل حركتان إِيـ ).

بِـي | تِـي | ثِـي

سَبِيلِ | يَتِيمَ | تُثِيرُ

جِـي | حِـي | خِـي

يُجِيبُ | أُحِيطَ | أَخِـيهِ

دِي | ذِي | رِي | زِي

شَدِيدُ | نَذِيرِ | نُرِيدُ | يَزِيغُ

١. بعد تمكين الحرف يقارن بين الكسر والمد بالياء نطقا فقط (إِ - إِي) (بِـ - بِـي)

٢. بعد تقديم كلمات كل مجموعة تقرأ مباشرة في نهاية الدرس مع مراعاة مرتبة التفخيم في هذه الحالة.

| | | | |
|---|---|---|---|
| سِيـ | شِيـ | صِيـ | ضِيـ |
| وَسِيقَ | بَشِيرٌ | بَصِيرٌ | يَضِيقُ |
| طِيـ | ظِيـ | عِيـ | غِيـ |
| أَسَـٰطِيرُ | حَـٰفِظِينَ | يُعِيدُ | وَغِيضَ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فِيـ | قِيـ | كِيـ | لِيـ | مِيـ |
| رَفِيعُ | وَقِيلَ | وَأَكِيدُ | فَـٰعِلِينَ | عَمِينَ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| نِيـ | هِيـ | وِى | يِى |
| مُنِيبِينَ | فَـٰكِهِينَ | ذَوِى | أَفَعَيِينَا |

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| نُرِيدُ<br>الإنسان: ٩ | شَدِيدُ<br>البقرة: ١٦٥ | وَأَكِيدُ<br>الطارق: ١٦ | وَيُعِيدُ<br>البروج: ١٣ |
| رَفِيعُ<br>غافر: ١٥ | بَدِيعُ<br>الأنعام: ١٠١ | يُنِيبُ<br>غافر: ١٣ | يُجِيبُ<br>النمل: ٦٢ |
| يَضِيقُ<br>الحجر: ٩٧ | يَهِيجُ<br>الزمر: ٢١ | يَزِيغُ<br>التوبة: ١١٧ | حَدِيثُ<br>الغاشية: ١ |
| وَغِيضَ<br>هـــود: ٤٤ | وَسِيقَ<br>الزمر: ٧١ | وَقِيلَ<br>آل عمران: ١٦٧ | تَمِيدَ<br>النحل: ١٥ |
| عَمِينَ<br>الأعراف: ٦٤ | فَكِهِينَ<br>المطففين: ٣١ | مُنِيبِينَ<br>الروم: ٣١ | وَبَنِينَ<br>الإسراء: ٦ |

تُقرأ الكلمات مباشرةً فإن لم يستطع المتعلم نبدأ بالتهجي.

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| يَغِيظُ<br>التوبة: ١٢٠ | وَنَمِيرُ<br>يوسف: ٦٥ | أَسَطِيرُ<br>الأنعام: ٢٥ | وَغَرَابِيبُ<br>فاطر: ٢٧ |
| صَرِيخَ<br>يس: ٤٣ | تَبِيدَ<br>الكهف: ٣٥ | سَبِيلِ<br>المزمل: ٢٠ | لِحَيَاتِي<br>الفجر: ٢٤ |
| فَعِلِينَ<br>يوسف: ١٠ | خَلِدِينَ<br>البقرة: ١٦٢ | حَفِظِينَ<br>يوسف: ٨١ | سَجِدِينَ<br>الأعراف: ١٢٠ |
| كَتِبِينَ<br>الإنفطار: ١١ | جَثِمِينَ<br>الأعراف: ٧٨ | سَفِلِينَ<br>التين: ٥ | كَظِمِينَ<br>غافر: ١٨ |
| ظَهِرِينَ<br>غافر: ٢٩ | مُعَجِزِينَ<br>الحج: ٥١ | أَبَابِيلَ<br>الفيل: ٣ | سَرَبِيلَ<br>النحل: ٨١ |

# المد بالواو

| | | | |
|---|---|---|---|
| بُو | تُو | ثُو | جُو |
| حُو | خُو | دُو | ذُو |
| رُو | زُو | سُو | شُو |
| صُو | ضُو | طُو | ظُو |
| عُو | غُو | فُو | قُو |
| كُو | لُو | مُو | نُو |
| هُو | وُو | أُو | يُو |

حروف لثوية — حروف تفخيم — حرف لثوي ومفخم

١. بيان أن الواو المدية تسبق بحرف مضموم مع مراعاة ضم الشفتين لتحقيق المد بالواو.

٢. تراجع التدريبات على الضم أثناء دروس المد بالواو.

٣. طريقة التهجي: (بُـ واو مد طبيعي حركتان بُو).

مع الهمزة فقط يسمى « مد بدل » ومع جميع الحروف يسمى « مد طبيعي » (أُ واو مد بدل حركتان أُو).

| | | |
|---|---|---|
| بُو | تُو | ثُو |
| أَبُوهُمَا | يَتُوبَ | لَبِثُوا۟ |

| | | |
|---|---|---|
| جُو | حُو | خُو |
| فُجُورَهَا | يَحُورَ | نَخُوضُ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| دُو | ذُو | رُو | زُو |
| صُدُورِ | يَذُوقُوا۟ | بِرُوحٍ | بَرَزُوا۟ |

١. بعد تمكين الحرف يقارن بين الضم والمد بالواو نطقا فقط (بُـــ– بُـو) ثم يقدم تهجي الكلمة يَـ – تُـ – يَتُـ – واو مد طبيعي حركتان يَتُو – بَ – يَتُوبَ .

٢. لَبِثُوا۟ وضع دائرة خالية الوسط يدل على زيادته فلا نطق وصلًا ولا وقفًا.

مثال "لَبِثُوا۟" ( لَـ – بِـ – لَبِـ – ثُـ – لَبِثُـ – واو مد طبيعي حركتين لَبِثُو ألف صفر مستدير لا ينطق لَبِثُوا۟ ).

| | | | |
|---|---|---|---|
| سُو | شُو | صُو | ضُو |
| رَسُولُ | نُشُورُ | خَلَصُوا | رَضُوا |
| طُو | ظُو | عُو | غُو |
| بُطُونِ | تَعِظُونَ | أَعُوذُ | يَغُوثَ |
| فُو | قُو | كُو | لُو |
| غَفُورُ | يَقُومُ | مَلَكُوتِ | تُقَتِلُونَ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| مُو | نُو | هُو | وُو | يُو |
| يَمُوتُ | يَدِينُونَ | سَاهُونَ | دَاوُدَ | بُيُوتِ |

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| يَقُومُ<br>إبراهيم: ٤١ | يَقُولُ<br>البقرة: ٨ | يَتُوبَ<br>آل عمران: ١٢٨ | أَعُوذُ<br>الفلق: ١ |
| صُدُورِ<br>الناس: ٥ | بُيُوتِ<br>النور: ٦١ | بِرُوحٍ<br>البقرة: ٨٧ | ذَنُوبِ<br>الذاريات: ٥٩ |
| يُوقَدُ<br>النور: ٣٥ | يُوثِقُ<br>الفجر: ٢٦ | مُوهِنُ<br>الأنفال: ١٨ | نُودِىَ<br>النمل: ٨ |
| أَقُولَ<br>المائدة: ١١٦ | رَسُولُ<br>النساء: ١٧١ | يَحُورَ<br>الغاشية: ١ | حُدُودَ<br>التوبة: ٩٧ |
| يُوصَلَ<br>البقرة: ٢٧ | مَلَكُوتُ<br>الأنعام: ٧٥ | نَخُوضُ<br>التوبة: ٦٥ | جَابُواْ<br>غافر: ١٥ |
| عَمُواْ<br>الأنعام: ١٠١ | كُلُواْ<br>البقرة: ١٦٥ | عَمِلُواْ<br>يونس: ٢٢ | وَرَضُواْ<br>الزمر: ٢١ |

تُقرأ الكلمات مباشرةً فإن لم يستطع المتعلم نبدأ بالتهجي.

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| بَرَزُوا<br>البقرة: ٢٥٠ | مَكَرُوا<br>إبراهيم: ٤٦ | كَفَرُوا<br>البقرة: ٦ | مَرَدُوا<br>التوبة: ١٠١ |
| ظَلَمُوا<br>البقرة: ٥٩ | خَلَصُوا<br>يوسف: ٨٠ | خَلَطُوا<br>التوبة: ١٠٢ | قَنَطُوا<br>الشورى: ٢٨ |
| عَرَفُوا<br>البقرة: ٨٩ | جَنَحُوا<br>الأنفال: ٦١ | لُعِنُوا<br>النور: ٢٣ | كُذِبُوا<br>يوسف: ١١٠ |
| فُجُورَهَا<br>الشمس: ٨ | فَعَقَرُوهَا<br>الشمس: ١٤ | تُقَتِلُونَ<br>النساء: ٧٥ | فَكِيدُونِ<br>المرسلات: ٣٩ |
| كَرِهُونَ<br>التوبة: ٥٤ | حَذِرُونَ<br>الشعراء: ٥٦ | عَبِدُونَ<br>البقرة: ١٣٨ | سَاهُونَ<br>الماعون: ٥ |
| يَدِينُونَ<br>التوبة: ٢٩ | يُوفِضُونَ<br>المعارج: ٤٣ | يُوعُونَ<br>الإنشقاق: ٢٣ | يَذُوقُونَ<br>النبأ: ٢٤ |

# مراجعة على المد بالألف والمد بالياء والمد بالواو

| | | |
|---|---|---|
| بَا بِي بُو | تَا تِي تُو | ثَا ثِي ثُو |
| جَا جِي جُو | حَا حِي حُو | خَا خِي خُو |
| دَا دِي دُو | ذَا ذِي ذُو | رَا رِي رُو |
| زَا زِي زُو | سَا سِي سُو | شَا شِي شُو |
| صَا صِي صُو | ضَا ضِي ضُو | طَا طِي طُو |
| ظَا ظِي ظُو | عَا عِي عُو | غَا غِي غُو |
| فَا فِي فُو | قَا قِي قُو | كَا كِي كُو |
| لَا لِي لُو | مَا مِي مُو | نَا نِي نُو |
| هَا هِي هُو | وَا وِي وُو | ءَا إِي أُو |
| | يَا يِي يُو | |

بَـ، ألف مد طبيعي حركتان بَا، بِـ، ياء مد طبيعي حركتان بِي، بُـ، واو مد طبيعي حركتان بُو، بَا بِي بُو.

# تدريبات على مد البدل

| | | | |
|---|---|---|---|
| ءَازَرَ<br>الأنعام: ٧٤ | ءَامَنَ<br>البقرة: ١٣ | ءَادَمَ<br>البقرة: ٣١ | ءَاتِنَا<br>الكهف: ٦٢ |
| ءَالِ<br>البقرة: ٤٩ | مَـَٔابِ<br>الرعد: ٣٦ | أُوحِىَ<br>الأنعام: ٩٣ | أُوتِىَ<br>البقرة: ١٣٦ |
| أُوفِ<br>البقرة: ٤٠ | ءَاثَـٰرَكَ<br>يوسف: ٩١ | ءَايَـٰتُكَ<br>آل عمران: ٤١ | لِإِيلَـٰفِ<br>قريش: ١ |
| خَـٰسِـِٔينَ<br>البقرة: ٦٥ | ءَاتَـٰهُمُ<br>النساء: ٥٤ | ءَاخَرُونَ<br>الفرقان: ٤ | فَـَٔاوَىٰ<br>الضحى: ٦ |
| أُوتُوا۟<br>البقرة: ١٠١ | لِّيُوَاطِـُٔوا۟<br>التوبة: ٣٧ | ءَاسَفُونَا<br>الزخرف: ٥٥ | فَـَٔاتَىٰهُمُ<br>آل عمران: ١٤٨ |
| ءَامِنِينَ<br>الفتح: ٢٧ | رُءُوسُ<br>الصافات: ٦٥ | بِـَٔايَـٰتِ<br>البقرة: ٦١ | وَءَاتُوا۟<br>البقرة: ٤٣ |

١. بيان أن حرف المد إذا سُبِقَ بهمزة ولم يكن بعده همزة أو سكون يسمى مد بدل ومقداره حركتان.

٢. التهجي: (ءَ – ألف مد بدل حركتان ءَا – مَـ – ءَامَـ – نَ – ءَامَنَ).

الشاهد: ( أَوْ قُدِّمَ الْـهَمْزُ عَلَى الْـمَدِّ وَذَا بَدَلْ كَئَامَنُوا وَإِيمَـانًا خُذَا )

# تدريبات على المد المتصل

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَرَآءِ<br>هـود: ٧١ | أَفَآءَ<br>الحشر: ٧ | شَآءَ<br>النبأ: ٣٩ | جَزَآءُ<br>المائدة: ٨٥ |
| سُوٓءَ<br>البقرة: ٤٩ | تَبُوٓأَ<br>المائدة: ٢٩ | لَتَنُوٓأُ<br>القصص: ٧٦ | حُنَفَآءَ<br>البينة: ٥ |
| فُقَرَآءَ<br>النور: ٣٢ | شُهَدَآءَ<br>المائدة: ٤٤ | بِلِقَآءِ<br>الأنعام: ٣١ | حَدَآئِق<br>النبأ: ٣٢ |
| تَفِىٓءَ<br>الحجرات: ٩ | سِىٓءَ<br>العنكبوت: ٣٣ | دَآئِرَةُ<br>الفتح: ٦ | يَتَسَآءَلُونَ<br>النبأ: ١ |
| بَطَآئِنُهَا<br>الرحمن: ٥٤ | لِيَسُـٓـُٔوا<br>الإسراء: ٧ | هَآؤُمُ<br>الحاقة: ١٩ | بُرَءَٰٓؤُاْ<br>الممتحنة: ٤ |

١. بيان أن حرف المد إذا تبع بهمزة في كلمة واحدة يسمى مد متصل (وحكمه واجب) وأن مقداره أربع أو خمس حركات مع بيان علامة المد.

٢. التهجي: (وَ–رَ–وَرَ–ألف مد متصل (واجب) أربع أو خمس حركات..... ءِ–وَرَآءِ).

٣. القراءة المباشرة في نهاية الحصة مع بيان أن المد في هَآؤُمُ مد متصل.

الشاهد: ( فَوَاجِبٌ إِنْ جَاءَ هَمْزٌ بَعْدَ مَدّ     فِي كِلْمَةٍ وَذَا بِمُتَّصِلٍ يُعَدّ )

# تدريبات على المد المنفصل

| | | |
|---|---|---|
| وَمَآ أُرِيدُ<br>هـود: ٨٨ | وَمَآ أَصَابَكَ<br>النساء: ٧٩ | مَاذَآ أَرَادَ<br>الحشر: ٦ |
| تَتُوبَآ إِلَى<br>البقرة: ٢٦ | فَمَآ ءَامَنَ<br>يونس: ٨٣ | وَمَآ ءَاتَىٰكُمُ<br>الحشر: ٧ |
| وَمَآ أَفَآءَ<br>السجدة: ١٠ | قَالُوٓاْ أَسَٰطِيرُ<br>التحريم: ٤ | وَمَآ أُمِرُوٓاْ<br>البينة: ٥ |
| فِيٓ ءَايَٰتِنَا<br>الحج: ٥١ | قَالُواْ يَٰٓأَبَانَا<br>يوسف: ١١ | يَٰبَنِيٓ ءَادَمَ<br>الأعراف: ٢٦ |
| هَٰٓؤُلَآءِ<br>النساء: ١٤٣ | فِيمَآ ءَاتَىٰكَ<br>القصص: ٧٧ | وَقَالُوٓاْ أَءِذَا<br>النحل: ٢٤ |

١. بيان أن حرف المد إذا وقع في نهاية كلمة وتبع بهمزة في بداية الكلمة التالية يسمى مد منفصل وحكمه جائز ومقداره حركتان أو أربع أو خمس حركات مع بيان علامة المد.

٢. التهجي: (وَ – مَـ – وَمَـ – ألف مد منفصل (جائز) اثنان أو أربع أوخمس حركات... أُ...وَمَآ أُ– رِ – أُرِ – ياء مد طبيعي حركتان أُرِيـ – دُ – أُرِيدُ – وَمَآ أُرِيدُ).

٣. القراءة المباشرة في نهاية الحصة مع بيان أن المد في (يَٰٓأَبَانَا) والمد الأول في (هَٰٓؤُلَآءِ) مد منفصل.

الشاهد: ( وَجَائِزٌ مَدٌّ وَقَصْرٌ إِنْ فُصِلْ ... كُلٌّ بِكِلْمَةٍ وَهَذَا الـمُنْـفَصِلْ )

# تدريبات على الفتح والكسر والضم والمدود

| | |
|---|---|
| وَكَفَىٰ بِنَا حَـٰسِبِينَ | الأنبياء: ٤٧ |
| وَقَتَلَ دَاوُۥدُ جَالُوتَ | البقرة: ٢٥١ |
| وَمَكَرُواْ وَمَكَرَ ٱللَّهُ | آل عمران: ٥٤ |
| يُجَـٰدِلُونَ فِىٓ ءَايَـٰتِ ٱللَّهِ | غافر: ٣٥ |
| فَرِحِينَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمُ | آل عمران: ١٧٠ |
| يُقَـٰتِلُونَ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ | النساء: ٧٦ |
| قَالَ لِفَتَىٰهُ ءَاتِنَا غَدَآءَنَا | الكهف: ٦٢ |
| لَآ إِلَىٰ هَـٰٓؤُلَآءِ وَلَآ إِلَىٰ هَـٰٓؤُلَآءِ | النساء: ١٤٣ |
| وَأُوذُواْ فِى سَبِيلِى وَقَـٰتَلُواْ وَقُتِلُواْ | آل عمران: ١٩٥ |

يتم تهجي الكلمة الأولى بمفردها ثم الكلمة الثانية بمفردها ثم نجمع الكلمتين ثم نتهجى الكلمة الثالثة بمفردها ثم نجمع الثلاث كلمات وهكذا ثم ننتهي بالقراءة المباشرة في نهاية الحصة.

(وَ – كَ – وَكَ – فَ – وَكَفَ – ألف مد طبيعي حركتان وَكَفَىٰ – بِـ – نَـ – بِنَـ – ألف مد طبيعي حركتان بِنَا – وَكَفَىٰ بِنَا – حَـ – ألف مد طبيعي حركتان حَا – سِـ – حَاسِـ – بِـ – حَاسِبِـ – ياء مد طبيعي حركتان حَاسِبِيـ – نَ – حَـٰسِبِينَ – وَكَفَىٰ بِنَا حَـٰسِبِينَ).

# التنوين بالفتح

| | | | |
|---|---|---|---|
| بًا | تًا | ثًا | جًا |
| حًا | خًا | دًا | ذًا |
| رًا | زًا | سًا | شًا |
| صًا | ضًا | طًا | ظًا |
| عًا | غًا | فًا | قًا |
| كًا | لًا | مًا | نًا |
| هًا | وًا | ءًا | يًا |

حروف لثوية — حروف تفخيم — حرف لثوي ومفخم

١. يوضع التنوين بالفتح فوق الحرف وليس فوق الألف، وهو– خطًّا –عبارة عن فتحتين. أما لفظًا فهو عبارة عن نون ساكنة. ويرسم ألف بعد التنوين بالفتح عدا الهمزة المسبوقة بألف والتاء المربوطة.

٢. عند الوقف على التنوين بالفتح ينطق مد عوض حركتان ما عدا التاء المربوطة فتكون (هاء ساكنة عند الوقف).

٣. التهجي: (باء تنوين بالفتح بًا – تاء تنوين بالفتح تًا– ثاء تنوين بالفتح ثًا... وهكذا).

ويتم نطق الحروف مباشرة هكذا (بًا – تًا – ثًا – جًا – حًا – خًا .....).

| | | |
|---|---|---|
| بًا | تًا ـ ةً | ثًا |
| عَجَبًا | فُرَاتًا ـ رَاضِيَةً | أَثَاثًا |
| جًا | حًا | خًا |
| سِرَاجًا | صَالِحًا | شُيُوخًا |
| رًا | زًا | |
| فِرَارًا | مَفَازًا | |

١. المقارنة بين الفتح والمد بالألف والتنوين بالفتح: بَـ - بَـ ألف مد طبيعي حركتان بَا - باء تنوين بالفتح بًا (بَـ - بَا - بًا).

٢. التهجي: (عَـ - جَـ - عَجَـ - باء تنوين بالفتح بًا عَجَبًا).

٣. :( فُـ - رَا - فُـرَا - تًا - فُرَاتًا ).

٤. القراءة المباشرة في نهاية الحصة.

| | | | |
|---|---|---|---|
| سًا | شًا | صًا | ضًا |
| لِبَاسًا | مَعَاشًا | خَالِصًا | حَرَضًا |

| | | | |
|---|---|---|---|
| طًا | ظًا | عًا | غًا |
| شَطَطًا | غَلِيظًا | سُوَاعًا | بَلِيغًا |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فًا | قًا | كًا | لًا | مًا |
| صُحُفًا | غَدَقًا | مَلِكًا | سَبِيلًا | عِظَـٰمًا |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| نًا | هًا | وًا | ءًا | يًا |
| لَبَنًا | إِلَـٰهًا | كُفُوًا | هَنِيٓـًٔا | هَادِيًا |

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَذَابًا<br>آل عمران: ٥٦ | صَوَابًا<br>النبأ: ٣٨ | أَثَاثًا<br>مريم: ٧٤ | مَفَازًا<br>النبأ: ٣١ |
| سُبَاتًا<br>النبأ: ٩ | فُرَاتًا<br>المرسلات: ٢٧ | سُوَاعًا<br>نوح: ٢٣ | سِرَاجًا<br>النبأ: ١٣ |
| لِبَاسًا<br>الأعراف: ٢٦ | بِسَاطًا<br>نوح: ١٩ | عِظَامًا<br>الإسراء: ٤٩ | فِرَارًا<br>الكهف: ١٨ |
| أَبَدًا<br>النساء: ١٢٢ | صَعَدًا<br>الجن: ١٧ | حَرَضًا<br>يوسف: ٨٥ | هَرَبًا<br>الجن: ١٢ |
| ثَقِيلًا<br>الإنسان: ٢٧ | سَبِيلًا<br>آل عمران: ٩٧ | وَبِيلًا<br>المزمل: ١٦ | وَكِيلًا<br>النساء: ٨١ |

١. يطلب من المتعلم القراءة المباشرة فإن لم يستطع، يبدأ بالتهجي وينتهي بالقراءة المباشرة.

٢. مراعاة ترقيق الهاء في (هَرَبًا) وترقيق الواو في (صَوَابًا).

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| كَذِبًا | عَجَبًا | صُحُفًا | كُفُوًا |
| الأنعام: ٩٣ | يونس: ٢ | البينة: ٢ | الإخلاص: ٤ |
| شَطَطًا | أَمَدًا | رَهَقًا | غَدَقًا |
| الجن: ٤ | الكهف: ١٢ | الجن: ١٣ | الجن: ١٦ |
| فَاجِرًا | نَاصِرًا | ثُبُورًا | وَنَهَارًا |
| نوح: ٢٧ | الجن: ٢٤ | الفرقان: ١٣ | نوح: ٥ |
| جَدِيدًا | يَتِيمًا | وَأَصِيلًا | رَاضِيَةً |
| الإسراء: ٩٨ | الضحى: ٦ | الأحزاب: ٤٢ | الفجر: ٢٨ |
| حَامِيَةً | وَدَانِيَةً | سُوًى | طُوًى |
| الغاشية: ٤ | الإنسان: ١٤ | طه: ٥٨ | طه: ١٢ |

مراعاة ترقيق النون في (نَاصِرًا) والشين في (شَطَطًا) والهاء في (رَهَقًا) وضم الفاء في (كُفُوًا).

# التنوين بالكسر

| | | | |
|---|---|---|---|
| بٍ | تٍ | ثٍ | جٍ |
| حٍ | خٍ | دٍ | ذٍ |
| رٍ | زٍ | سٍ | شٍ |
| صٍ | ضٍ | طٍ | ظٍ |
| عٍ | غٍ | فٍ | قٍ |
| كٍ | لٍ | مٍ | نٍ |
| هٍ | وٍ | إٍ | يٍ |

حروف لثوية — حروف تفخيم — حرف لثوي ومفخم

١. يوضع التنوين بالكسر تحت الحرف وهو خطا عبارة عن كسرتين ولفظًا عبارة عن نون ساكنة ويثبت وصلًا فقط وعند الوقف يسكن الحرف.

٢. التهجي: (باء تنوين بالكسر بٍ - تاء تنوين بالكسر تٍ - ثاء تنوين بالكسر ثٍ...وهكذا).

| | | |
|---|---|---|
| بٍ | تٍ - ةٍ | ثٍ |
| شُعَبٍ | عَبَدَاتٍ - بَرَرَةٍ | حَدِيثٍ |

| | | |
|---|---|---|
| جٍ | حٍ | خٍ |
| بُرُوجٍ | نُوحٍ | بِأَخٍ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| دٍ | ذٍ | رٍ | زٍ |
| وَشَاهِدٍ | حِينَئِذٍ | قَرَارٍ | عَزِيزٍ |

١. المقارنة بين الكسر والمد بالياء والتنوين بالكسر:

بِـ – بِـ ياء مد طبيعي حركتان بي – باء تنوين بالكسر بٍ (بِـ – بِي – بٍ).

٢. التهجي: (شُـ – عَـ – شَعَـ – باء تنوين بالكسر شُعَبٍ).

٣. عند الوقف على التاء المربوطة تنطق هاء ساكنة.

٤. القراءة المباشرة في نهاية الحصة.

| | | | |
|---|---|---|---|
| سِ | شِ | صِ | ضِ |
| قَبَسِ | وَفُرُشِ | مَحِيصِ | عَرِيضِ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| طِ | ظِ | عِ | غِ |
| لُوطِ | غَلِيظِ | جُوعِ | بَاغِ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| فِ | قِ | كِ | لِ |
| صُحُفِ | سَاقِ | نُسُكِ | ظَلِيلِ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| مِ | نِ | هِ | إِ |
| نَعِيمِ | أَمِينِ | إِلَٰهِ | نَبَإِ |

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| نَبَإٍ | كَبَدٍ | فَلَكٍ | قَبَسٍ |
| الأنعام: ٦٧ | البلد: ٤ | يس: ٤٠ | النمل: ٧ |
| صُحُفٍ | خُلُقٍ | نُسُكٍ | شُعَبٍ |
| عبس: ١٣ | القلم: ٤ | البقرة: ١٩٦ | المرسلات: ٣٠ |
| غُرُورٍ | فُرُوجٍ | وَنُفُورٍ | وَعُيُونٍ |
| الملك: ٢٠ | ق: ٦ | الملك: ٢١ | الحجر: ٤٥ |
| لُوطٍ | جُوعٍ | بَرَرَةٍ | رَقَبَةٍ |
| هود: ٧٠ | قريش: ٤ | عبس: ١٦ | النساء: ٩٢ |
| بَاغٍ | عَادٍ | قَرَارٍ | عَذَابٍ |
| البقرة: ١٧٣ | البقرة: ١٧٣ | إبراهيم: ٢٦ | هود: ٥٨ |

١. إذا لم يستطع المتعلم القراءة المباشرة يبدأ بالتهجي وينتهي بالقراءة المباشرة.

٢. مراعاة ترقيق الباء في ( بَرَرَةٍ ).

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| سَاقٍ<br>القلم: ٤٢ | لَيَالٍ<br>الحاقة: ٧ | دَافِعٍ<br>الطور: ٨ | وَشَاهِدٍ<br>البروج: ٣ |
| فَرِيقٍ<br>التوبة: ١١٧ | ظَلِيلٍ<br>المرسلات: ٣١ | نَعِيمٍ<br>الواقعة: ٨٩ | عَظِيمٍ<br>آل عمران: ١٧٤ |
| حَمِيمٍ<br>الأنعام: ٧٠ | جَحِيمٍ<br>الانفطار: ١٤ | بِنَمِيمٍ<br>القلم: ١١ | بِضَنِينٍ<br>التكوير: ٢٤ |
| أَمِينٍ<br>الدخان: ٥١ | ضَرِيعٍ<br>الغاشية: ٦ | بِشَرَرٍ<br>المرسلات: ٣٢ | عَالِيَةٍ<br>الغاشية: ١٠ |
| مُهَٰجِرَٰتٍ<br>الممتحنة: ١٠ | عَٰبِدَٰتٍ<br>التحريم: ٥ | قَٰنِتَٰتٍ<br>التحريم: ٥ | شَٰمِخَٰتٍ<br>المرسلات: ٢٧ |

مراعاة ترقيق العين في (عَظِيمٍ) و الشين في (بِشَرَرٍ).

# التنوين بالضم

| | | | |
|---|---|---|---|
| بٌ | تٌ | ثٌ | جٌ |
| حٌ | خٌ | دٌ | ذٌ |
| رٌ | زٌ | سٌ | شٌ |
| صٌ | ضٌ | طٌ | ظٌ |
| عٌ | غٌ | فٌ | قٌ |
| كٌ | لٌ | مٌ | نٌ |
| هٌ | وٌ | أٌ | ىٌ |

حروف لثوية — حروف تفخيم — حرف لثوي ومفخم

١. يوضع التنوين بالضم فوق الحرف وهو- خطًّا- عبارة عن ضمتين- ولفظًا- عبارة عن نون ساكنة ويثبت وصلًا فقط وعند الوقف يسكن الحرف.

٢. التهجي: (بَاء تنوين بالضم بٌ – تاء تنوين بالضم تٌ... وهكذا).

| ب | تٌ - ـةٌ |
| --- | --- |
| كُتُبٌ | ءَايَـٰتٌ - حَسَنَةٌ |

| جٌ | حٌ | خٌ |
| --- | --- | --- |
| حَرَجٌ | نَاصِحٌ | أَخٌ |

| دٌ | رٌ | زٌ |
| --- | --- | --- |
| أَحَدٌ | شَاكِرٌ | عَزِيزٌ |

١. المقارنة بين الضم والمد بالواو والتنوين بالضم: بُ - بُـ واو مد طبيعي حركتان بُو - باء تنوين بالضم بٌـ (بُـ - بُو - بٌـ).

٢. التهجي: (ظَ - مَـ - ظَمَـ - همزة تنوين بالضم ظَمَأٌ).

٣. عند الوقف على التاء المربوطة تنطق هاء ساكنة.

| | | |
|---|---|---|
| ضٌ | صٌ | سٌ |
| فَارِضٌ | حَرِيصٌ | لِبَاسٌ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| غٌ | عٌ | ظٌ | طٌ |
| بَلَـٰغٌ | فَاقِعٌ | غِلَاظٌ | مُحِيطٌ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| لٌ | كٌ | قٌ | فٌ |
| رُسُلٌ | مُبَارَكٌ | زَاهِقٌ | رَءُوفٌ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| أٌ | هٌ | نٌ | مٌ |
| ظَمَأٌ | إِلَـٰهٌ | أُذُنٌ | عَلِيمٌ |

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَلَدٌ<br>الزخرف: ٨١ | أَحَدٌ<br>آل عمران: ٧٣ | زَبَدٌ<br>الرعد: ١٧ | ظَمَأٌ<br>التوبة: ١٢٠ |
| نَفَرٌ<br>الجن: ١ | قَتَرٌ<br>يونس: ٢٦ | غَضَبٌ<br>الأعراف: ١٥٢ | حَرَجٌ<br>الأعراف: ٢ |
| فِئَةٌ<br>آل عمران: ١٣ | لَعِبٌ<br>الأنعام: ٣٢ | سُنَنٌ<br>آل عمران: ١٣٧ | أُمَمٌ<br>الأنعام: ٣٨ |
| كُتُبٌ<br>البينة: ٣ | أُذُنٌ<br>الحاقة: ١٢ | رُسُلٌ<br>آل عمران: ١٨٣ | حُمُرٌ<br>المدثر: ٥٠ |
| زَاهِقٌ<br>الأنبياء: ١٨ | وَابِلٌ<br>البقرة: ٢٦٤ | شَاكِرٌ<br>البقرة: ١٥٨ | فَاعِلٌ<br>الكهف: ٢٣ |

١. إذا لم يستطع المتعلم القراءة المباشرة يبدأ بالتهجي وينتهي بالقراءة المباشرة.

٢. مراعاة ترقيق الميم في (ظَمَأٌ) والحاء في (حَرَجٌ) والنون في (نَفَرٌ) والتاء في (قَتَرٌ).

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| هَالِكٌ | مُبَارَكٌ | ظَالِمٌ | رَجُلٌ |
| القصص: ٨٨ | الأنعام: ٩٢ | الكهف: ٣٥ | النساء: ١٢ |
| حَسَنَةٌ | خَافِيَةٌ | خَالِصَةٌ | وَزِيَادَةٌ |
| النساء: ٧٨ | الحاقة: ١٨ | الأنعام: ١٣٩ | يونس: ٢٦ |
| غَالِبٌ | قَادِرٌ | غَفُورٌ | عَلِيمٌ |
| يوسف: ٢١ | الأنعام: ٣٧ | البقرة: ١٧٣ | البقرة: ٢٩ |
| وَبِيَعٌ | وَأَجَلٌ | فَنُزُلٌ | لَقَسَمٌ |
| الحج: ٤٠ | الأنعام: ٢ | الواقعة: ٩٣ | الواقعة: ٧٦ |
| فَنَظِرَةٌ | كَاذِبَةٌ | ضَلَٰلَةٌ | كِتَٰبٌ |
| البقرة: ٢٨٠ | الواقعة: ٢ | الأعراف: ٦١ | البقرة: ٨٩ |

مراعاة ترقيق الباء في (مُبَارَكٌ) واللام في (ضَلَٰلَةٌ) وكسر الظاء في (فَنَظِرَةٌ).

# التنوين بالفتح والكسر والضم

| | | |
|---|---|---|
| بًا بٍ بٌ | تًا ـةٍ ةٌ | ثًا ثٍ ثٌ |
| جًا جٍ جٌ | حًا حٍ حٌ | خًا خٍ خٌ |
| دًا دٍ دٌ | ذًا ذٍ ذٌ | رًا رٍ رٌ |
| زًا زٍ زٌ | سًا سٍ سٌ | شًا شٍ شٌ |
| صًا صٍ صٌ | ضًا ضٍ ضٌ | طًا طٍ طٌ |
| ظًا ظٍ ظٌ | عًا عٍ عٌ | غًا غٍ غٌ |
| فًا فٍ فٌ | قًا قٍ قٌ | كًا كٍ كٌ |
| لًا لٍ لٌ | مًا مٍ مٌ | نًا نٍ نٌ |
| هًا هٍ هٌ | وًا وٍ وٌ | ءًا إٍ أٌ |
| | يًا يٍ يٌ | |

# السكون

| | | | |
|---|---|---|---|
| بَأْ | أَبْ | مِتْ | مِثْ |
| يَجْ | يَحْ | يَخْ | يَدْ |
| إِذْ | إِرْ | أَزْ | أَسْ |
| يَشْ | يَصْ | تَضْ | تَطْ |
| أَظْ | تُعْ | يَغْ | يَفْ |
| ذُقْ | ذِكْ | فَلْ | مَمْ |
| عَنْ | يَهْ | لَوْ | حَيْ |

■ حروف القلقلة مجموعة في (قطب جد).

١. عند نطق الحرف الساكن لابد من إدخال حرف متحرك قبله ويراعى تغيير الحرف المتحرك.

٢. يلاحظ ظهور بعض الصفات بوضوح عند نطق الحرف الساكن مثل «القلقلة والهمس».

٣. رسم السكون في المصحف ( ْ ) يختلف عن الرسم الإملائي (٥).

٤. التهجي: (بَـ – همزة ساكنة (سكون) بَأْ) (مِـ – تاء ساكنة (سكون) مِتْ) أما حروف القلقلة: (أَ – باء ساكنة مقلقلة أَبْ) (يَـ – جيم ساكنة مقلقلة يَجْ).

| | | | |
|---|---|---|---|
| بَأُ | أَبْـ | مِتْ | أَثْ |
| بَأْسِ | أَبْوَابًا | مِتْنَا | أَثْمَرَ |
| أَجْ | يَحْـ | يَخْـ | — |
| أَجْرُ | يَحْسَبُ | يَخْلُقُ | — |
| صَدْ | أَذْ | مِرْ | أَزْ |
| صَدْرَكَ | أَذْهَبَ | مِرْيَةٍ | أَزْوَاجًا |
| نَسْ | أَشْ | عُصْ | تَضْ |
| نَسْيًا | أَشْهُرٌ | عُصْبَةٌ | تَضْلِيلٍ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| مَطْ | أَظْ | يُعْ | لَغْ |
| مَطْلَعِ | وَأَظْهَرَهُ | يُعْطِيكَ | بَلَغْنَ |
| أَفْ | نَقْ | ذِكْ | فَلْ |
| أَفْوَاجًا | نَقْهَرْ | ذِكْرَكَ | فَلْيَدْعُ |
| دَمْ | عَنْ | لَهْ | ـــ |
| فَدَمْدَمَ | عَنْهُمْ | لَهْوٌ | ـــ |

| | |
|---|---|
| سَوْ ـ خَوْ | كَيْ ـ وَيْ |
| سَوْفَ ـ خَوْفٌ | كَيْفَ ـ وَيْلٌ |

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| بَأْسٍ<br>الإسراء: ٥ | كَأْسٍ<br>الإنسان: ٥ | أَبْصِرْ<br>الكهف: ٢٦ | أَبْوَٰبًا<br>الزخرف: ٣٤ |
| تَبْصِرَةً<br>ق: ٨ | مِتْنَا<br>المؤمنون: ٨٢ | أَثْمَرَ<br>الأنعام: ٩٩ | مِثْقَالَ<br>الزلزلة: ٨ |
| أَجْرٌ<br>آل عمران: ١٧٢ | تَجْرِى<br>البقرة: ٢٥ | يُولَدْ<br>الإخلاص: ٣ | صَدْرِك<br>الأعراف: ٢ |
| تَدْعُونَ<br>الأنعام: ٤٠ | بِإِذْنِ<br>البقرة: ٩٧ | وَأَرْسِلْ<br>الأعراف: ١١١ | مُرْدِفِينَ<br>الأنفال: ٩ |
| قِرْطَاسٍ<br>الأنعام: ٧ | أَزْوَٰجٍ<br>الأنعام: ١٤٣ | يُوَسْوِسُ<br>الناس: ٥ | يَفْتَرِى<br>النحل: ١٠٥ |
| أَشْهُرٌ<br>البقرة: ١٩٧ | بِأَصْحَٰبِ<br>الفيل: ١ | عُصْبَةٌ<br>يوسف: ٨ | تَضْلِيلٍ<br>الفيل: ٢ |

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| يُعْطِيكَ<br>الضحى: ٥ | فَرَغْتَ<br>الشرح: ٧ | بِنِعْمَةِ<br>القلم: ٢ | أَفْوَاجًا<br>النصر: ٢ |
| نَقْعًا<br>العاديات: ٤ | نَفْعًا<br>المائدة: ٧٦ | سَقْفًا<br>الأنبياء: ٣٢ | نَسْيًا<br>مريم: ٢٣ |
| تَقْوِيمٍ<br>التين: ٤ | تَقْهَرْ<br>الضحى: ٩ | يَقْدِرَ<br>البلد: ٥ | مَقْرَبَةٍ<br>البلد: ١٥ |
| وَتَقْوَاهَا<br>الشمس: ٨ | عُقْبَاهَا<br>الشمس: ١٥ | أَشْرَكْتَ<br>الزمر: ٦٥ | فَلْيَكْتُبْ<br>البقرة: ٢٨٢ |
| ذِكْرَكَ<br>الشرح: ٤ | فَلْيَدْعُ<br>العلق: ١٧ | يَلْمِزُكَ<br>التوبة: ٥٨ | فَدَمْدَمَ<br>الشمس: ١٤ |
| مَمْنُونٍ<br>التين: ٦ | وَيَمْنَعُونَ<br>الماعون: ٧ | يَفْعَلُونَ<br>البقرة: ٧١ | يَعْدِلُونَ<br>الأنعام: ١ |

# اللام القمرية

اللام القمرية هي لام تكتب وتنطق ويرسم عليها السكون ( ۡ ) وتسبق بهمزة وصل وتتبع بأحد حروف ( إِبْغِ حَجَّكَ وَخَفْ عَقِيمَه )

| | | | |
|---|---|---|---|
| ٱلۡأَرۡضَ<br>البقرة: ٢٢ | ٱلۡبَٰطِلَ<br>الأنفال: ٨ | ٱلۡغَيۡبَ<br>الأنعام: ٥٠ | ٱلۡحَكِيمُ<br>البقرة: ٣٢ |
| ٱلۡجَوَارِ<br>التكوير: ١٦ | ٱلۡكَيۡلَ<br>الأنعام: ١٥٢ | ٱلۡوَسۡوَاسِ<br>الناس: ٤ | ٱلۡخَوۡفِ<br>البقرة: ١٥٥ |
| ٱلۡفَلَقِ<br>الفلق: ١ | ٱلۡعُمُرِ<br>النحل: ٧٠ | ٱلۡقِسۡطَ<br>الأنبياء: ٤٧ | ٱلۡيَمِينِ<br>النحل: ٤٨ |
| ٱلۡمُلۡكُ<br>البقرة: ٢٤٧ | ٱلۡهُدَىٰ<br>المائدة: ٢ | لَلۡهُدَىٰ<br>الليل: ١٢ | وَلِلۡأَرۡضِ<br>فصلت: ١١ |
| وَلَلۡأٓخِرَةُ<br>الضحى: ٤ | لِلۡغَيۡبِ<br>النساء: ٣٤ | لِلۡأَنَامِ<br>الرحمن: ١٠ | وَلِلۡمُؤۡمِنِينَ<br>إبراهيم: ٤١ |

١ . همزة الوصل التي تسبق اللام القمرية تسقط وصلاً ويُبدأ بها أ و أحيانًا تسقط خطًّا ولفظًا مثل (لِلۡغَيۡبِ - لَلۡهُدَىٰ).

٢ . التهجي: ( همزةُ وصلٍ تسقطُ وصلاً نبدأُ بها أَ - لام قمرية مظهرة الْـ - أَرْ - الأرْ - ضَ - ٱلۡأَرۡضَ ).

( لَـ - لام قمرية مظهرة لَلْـ - هُـ - لَلْهُـ - دَ - لَلْهُدَ - ألف مد طبيعي حركتان لَلۡهُدَىٰ ).

# تدريبات على الجمل

| | |
|---|---|
| قَدۡ أَفۡلَحَ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ | المؤمنون: ١ |
| أَلَمۡ نَشۡرَحۡ لَكَ صَدۡرَكَ | الشرح: ١ |
| وَرَفَعۡنَا لَكَ ذِكۡرَكَ | الشرح: ٤ |
| فَخُذۡ مَآ ءَاتَيۡتُكَ | الأعراف: ١٤٤ |
| سُبۡحَٰنَكَ تُبۡتُ إِلَيۡكَ | الأعراف: ١٤٣ |
| تِلۡكَ ءَايَٰتُ ٱلۡكِتَٰبِ ٱلۡحَكِيمِ | لقمان: ٢ |
| وَمَا تِلۡكَ بِيَمِينِكَ يَٰمُوسَىٰ | طه: ١٧ |
| وَنَضَعُ ٱلۡمَوَٰزِينَ ٱلۡقِسۡطَ لِيَوۡمِ ٱلۡقِيَٰمَةِ | الأنبياء: ٤٧ |
| لَقُضِيَ ٱلۡأَمۡرُ بَيۡنِي وَبَيۡنَكُمۡ | الأنعام: ٥٨ |
| وَلَقَدۡ ءَاتَيۡنَا لُقۡمَٰنَ ٱلۡحِكۡمَةَ | لقمان: ١٢ |

# التشديد مع الفتح والمد بالألف

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رَبَّ | مِتَّ | بَثَّ | حَجَّ | شُحَّ | سَخَّ | قُدَّ |
| رَبَّا | مِتَّا | بَثَّا | حَجَّا | شُحَّا | سَخَّا | قُدَّا |
| يَذَّ | شَرَّ | عِزَّ | مَسَّ | هَشَّ | وَصَّ | حَضَّ |
| يَذَّا | شَرَّا | عِزَّا | مَسَّا | هَشَّا | وَصَّا | حَضَّا |
| تَطَّ | حَظَّ | دَعَّ | أَغَّ | صَفَّ | حَقَّ | شَكَّ |
| تَطَّا | حَظَّا | دَعَّا | أَغَّا | صَفَّا | حَقَّا | شَكَّا |
| كُلَّ | عَمَّ | ظَنَّ | وَهَّ | قَوَّ | حَيَّ | — |
| كُلَّا | عَمَّا | ظَنَّا | وَهَّا | قَوَّا | حَيَّا | — |

١. الحرف المشدد عبارة عن حرفين الأول ساكن والثاني متحرك. ولا يمكن البدء بحرف مشدد فيسبق بمتحرك.

٢. التهجي: (رَ – باء شدة وفتحة رَبَّ) (مِ – تاء شدة وفتحة مِتَّ) وهكذا.....

٣. المقارنة بين التشديد بالفتح والتشديد مع المد بالألف: (رَبَّ – رَبَّا) (مِتَّ – مِتَّا) وهكذا.....

٤. مراعاة الغنة مع الميم والنون المشددتين. (عَـ – ميم شدة بغنة حركتين عَمَّ).

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| رَبَّنَا | سَبَّحَ | فَصَبَّ | بَثَّ |
| البقرة: ١٢٧ | الحديد: ١ | الفجر: ١٣ | الشورى: ٢٩ |
| رُجَّتِ | قَدَّرَ | أَعَدَّ | وَكَذَّبَ |
| الواقعة: ٤ | الأعلى: ٣ | التوبة: ٨٩ | الأنعام: ٦٦ |
| كَرَّةً | تَفَرَّقَ | تَذَرُنَّ | خَفَّتْ |
| البقرة: ١٦٧ | البينة: ٤ | نوح: ٢٣ | القارعة: ٨ |
| فِضَّةٍ | غُصَّةٍ | ذَرَّةٍ | تُنَزَّلَ |
| الزخرف: ٣٣ | المزمل: ١٣ | الزلزلة: ٨ | آل عمران: ٩٣ |
| وَبُسَّتِ | تَطَّلِعُ | يَتَأَخَّرَ | يَتَقَدَّمَ |
| الواقعة: ٥ | المائدة: ١٣ | المدثر: ٣٧ | المدثر: ٣٧ |

مراعاة التركيز في هذه التدريبات على القراءة المباشرة وإذا لم يستطع المتعلم نبدأ بالمرحلة التي تناسبه من مراحل التهجي ثم يقوم بتكرار القراءة المباشرة عدة مرات.

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| سَحَّارٍ | أَفَّاكٍ | خَتَّارٍ | حَلَّافٍ |
| الشعراء: ٣٧ | الجاثية: ٧ | لقمان: ٣٢ | القلم: ١٠ |
| لَوَّاحَةٌ | سَيَّارَةٌ | كَفَّارَةٌ | وَغَسَّاقٌ |
| المدثر: ٢٩ | يوسف: ١٩ | المائدة: ٤٥ | ص: ٥٧ |
| دَيَّارًا | وَهَّاجًا | ثَجَّاجًا | نَزَّاعَةً |
| نوح: ٢٦ | النبأ: ١٣ | النبأ: ١٤ | المعارج: ١٦ |
| فَعَّالٌ | لَغَفَّارٌ | وَجَنَّٰتٍ | عَلَّٰمُ |
| البروج: ١٦ | طه: ٨٢ | الأنعام: ٩٩ | المائدة: ١١٦ |
| سَوَّىٰهَا | تَغَشَّىٰهَا | إِيَّاكَ | نَضَّاخَتَانِ |
| الشمس: ٧ | الأعراف: ١٨٩ | الفاتحة: ٥ | الرحمن: ٦٦ |

مراعاة ترقيق الياء في ( سَيَّارَةٌ ) والنون في ( نَضَّاخَتَانِ ) والفاء في ( لَغَفَّارٌ )
والكاف والفاء في ( كَفَّارَةٌ ).

# التشديد مع الكسر والمد بالياء

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رَبِّ | مِتِّ | بَثِّ | حَجِّ | شُحِّ | سَخِّ | قُدِّ |
| رَبِّى | مِتِّى | بَثِّى | حَجِّى | شُحِّى | سَخِّى | قُدِّى |
| يَذِّ | شَرِّ | عِزِّ | مَسِّ | هَشِّ | وَصِّ | حَضِّ |
| يَذِّى | شَرِّى | عِزِّى | مَسِّى | هَشِّى | وَصِّى | حَضِّى |
| حَطِّ | حَظِّ | دَعِّ | أَغِّ | صَفِّ | حَقِّ | شَكِّ |
| حَطِّى | حَظِّى | دَعِّى | أَغِّى | صَفِّى | حَقِّى | شَكِّى |
| كُلِّ | عَمِّ | ظَنِّ | وَهِّ | قَوِّ | حَيِّ | — |
| كُلِّى | عَمِّى | ظَنِّى | وَهِّى | قَوِّى | حَيِّى | — |

١. في الرسم القرآني توضع الشدة فوق الحرف وتوضع الكسرة تحت الحرف.

٢. التهجي : (رَ – باء شدة وكسرة رَبِّ) (مِ – تاء شدة وكسرة مِتِّ) وهكذا.....

تتم المقارنة بين التشديد بالكسر و التشديد بالكسر مع المد بالياء

مثال:( رَبِّ – رَبِّي – مِتِّ – مِتِّي )

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| زُوِّجَتْ<br>التكوير: ٧ | كُوِّرَتْ<br>التكوير: ١ | فُجِّرَتْ<br>الانفطار: ٣ | سُجِّرَتْ<br>التكوير: ٦ |
| تُحَدِّثُ<br>الزلزلة: ٤ | نُصَرِّفُ<br>الأنعام: ٤٦ | وَيُحَرِّمُ<br>الأعراف: ١٥٧ | فَسَبِّحْ<br>الحجر: ٩٨ |
| عُطِّلَتْ<br>التكوير: ٤ | وَبُرِّزَتِ<br>النازعات: ٣٦ | أُقِّتَتْ<br>المرسلات: ١١ | سُعِّرَتْ<br>التكوير: ١٢ |
| وَحُصِّلَ<br>العاديات: ١٠ | بُشِّرَ<br>النحل: ٥٨ | تُحَرِّكْ<br>القيامة: ١٦ | فَصَلِّ<br>الكوثر: ٢ |
| قَيِّمَةٌ<br>البينة: ٣ | سُيِّرَتْ<br>التكوير: ٣ | فَمَهِّلِ<br>الطارق: ١٧ | كَصَيِّبٍ<br>البقرة: ١٩ |

التركيز على القراءة المباشرة مع مراعاة ترقيق الفاء واللام في ( فَصَلِّ )
وترقيق الراء في ( وَيُحَرِّمُ - وَبُرِّزَتِ - نُصَرِّفُ )
وتفخيم الراء في (سُعِّرَتْ - كُوِّرَتْ - سُيِّرَتْ ) وترقيق الكاف في ( كَصَيِّبٍ )

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| نُوَلِّى<br>الأنعام: ١٢٩ | وَقَرِّى<br>مريم: ٢٦ | عِلِّيِّينَ<br>المطففين: ١٨ | سِتِّينَ<br>المجادلة: ٤ |
| صِدِّيقًا<br>مريم: ٥٦ | قُصِّيهِ<br>القصص: ١١ | سِجِّينٍ<br>المطففين: ٧ | نُنَجِّيكَ<br>يونس: ٩٢ |
| وَيُزَكِّيهِمْ<br>الجمعة: ٢ | وَيُمَنِّيهِمْ<br>النساء: ١٢٠ | فَيُوَفِّيهِمْ<br>آل عمران: ٥٧ | يُغَشِّيكُمُ<br>الأنفال: ١١ |
| مُتَوَفِّيكَ<br>آل عمران: ٥٥ | نُسَوِّيكُم<br>الشعراء: ٩٨ | سِجِّيلٍ<br>هود: ٨٢ | مُوَلِّيهَا<br>البقرة: ١٤٨ |
| رَبَّٰنِيِّۦنَ<br>آل عمران: ٧٩ | ٱلْأُمِّيِّۦنَ<br>الجمعة: ٢ | لَيَأْتِيَنِّى<br>النمل: ٢١ | صِدِّيقَةٌ<br>المائدة: ٧٥ |

مراعاة غنة الميم والنون المشددتين – وترقيق الراء في ( وَقَرِّى )
وترقيق الدال في ( صِدِّيقًا – صِدِّيقَةٌ )

# التشديد مع الضم والمد بالواو

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رَبُّ | مِتُّ | بَثُّ | حَجُّ | شُحُّ | سَخُّ | قُدُّ |
| رَبُّو | مِتُّو | بَثُّو | حَجُّو | شُحُّو | سَخُّو | قُدُّو |
| يَذُّ | شَرُّ | عِزُّ | مَسُّ | هَشُّ | وَصُّ | حَضُّ |
| يَذُّو | شَرُّو | عِزُّو | مَسُّو | هَشُّو | وَصُّو | حَضُّو |
| تَطُّ | حَظُّ | دَعُّ | أَغُّ | صَفُّ | حَقُّ | شَكُّ |
| تَطُّو | حَظُّو | دَعُّو | أَغُّو | صَفُّو | حَقُّو | شَكُّو |
| كُلُّ | عَمُّ | ظَنُّ | وَهُّ | قَوُّ | حَيُّ | —— |
| كُلُّو | عَمُّو | ظَنُّو | وَهُّو | قَوُّو | حَيُّو | —— |

التهجي: (رَ – باء شدة وضمة رَبُّ) (مِ – تاء شدة وضمة مِتُّ) وهكذا.....

تتم المقارنة بين التشديد بالضم و التشديد بالضم مع المد بالواو

مثال:( رَبَّ – رَبُّو – مِتِّ – مِتُّو )

# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| يُحِبُّ<br>البقرة: ١٩٠ | يَبُثُّ<br>الجاثية: ٤ | يُرَدُّ<br>الأنعام: ١٤٧ | أَشَدُّ<br>البقرة: ٧٤ |
| يَفِرُّ<br>عبس: ٣٤ | تَسُرُّ<br>البقرة: ٦٩ | نَقُصُّ<br>الأعراف: ١٠١ | يَعَضُّ<br>الفرقان: ٢٧ |
| يَدُعُّ<br>الماعون: ٢ | وَيُحِلُّ<br>الأعراف: ١٥٧ | وَأَقَلُّ<br>الجن: ٢٤ | أَضَلُّ<br>الأعراف: ١٧٩ |
| مُتِمُّ<br>الصف: ٨ | يَظُنُّ<br>الحج: ١٥ | يَمُنُّ<br>الحجرات: ١٧ | وَيُحِقُّ<br>يونس: ٨٢ |
| وَأَهُشُّ<br>طه: ١٨ | وَرَبُّكَ<br>المائدة: ٢٤ | عَنِتُّمْ<br>التوبة: ١٢٨ | تَقْشَعِرُّ<br>الزمر: ٢٣ |
| وَلِيُّنَا<br>سبأ: ٤١ | لَيُوَلُّنَّ<br>الحشر: ١٢ | يَصُدُّنَّكَ<br>القصص: ٨٧ | كُلُّهُنَّ<br>الأحزاب: ٥١ |

التركيز على القراءة المباشرة مع مراعاة تفخيم الراء في ( يَفِرُّ - تَسُرُّ - تَقْشَعِرُّ )
وترقيق الياء والعين في ( يَعَضُّ ) وترقيق الواو في ( وَرَبُّكَ )

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| أُمِّيُّونَ<br>البقرة: ١٩٠ | رِبِّيُّونَ<br>الجاثية: ٤ | عِلِّيُّونَ<br>الأنعام: ١٤٧ | وَيُحِبُّونَ<br>البقرة: ٧٤ |
| تُحِبُّونَ<br>عبس: ٣٤ | يَقُصُّونَ<br>البقرة: ٦٩ | يَمُنُّونَ<br>الأعراف: ١٠١ | يُوَلُّونَ<br>الفرقان: ٢٧ |
| فَشُدُّواْ<br>الماعون: ٢ | وَأَعِدُّواْ<br>الأعراف: ١٥٧ | وَهَمُّواْ<br>الجن: ٢٤ | وَصَمُّواْ<br>الأعراف: ١٧٩ |
| فَحَيُّواْ<br>الصف: ٨ | تَسُبُّواْ<br>الحج: ١٥ | صَلُّواْ<br>الحجرات: ١٧ | وَأَصَرُّواْ<br>يونس: ٨٢ |
| أَضَلُّواْ<br>طه: ١٨ | مَرُّواْ<br>المائدة: ٢٤ | يَخِرُّونَ<br>التوبة: ١٢٨ | يَصُدُّونَ<br>الزمر: ٢٣ |
| وَأَيُّوبَ<br>سبأ: ٤١ | تُوَلُّواْ<br>الحشر: ١٢ | لَمُوَفُّوهُمْ<br>القصص: ٨٧ | تَحُسُّونَهُم<br>الأحزاب: ٥١ |

مراعاة كسر الحاء في ( تُحِبُّونَ ) وترقيق الياء في ( يَقُصُّونَ ) واللام في (صَلُّواْ )
والواو والهمزة في (وَأَصَرُّواْ )
والياء والدال في (يَصُدُّونَ) وتفخيم الراء في ( يَخِرُّونَ ) مع مراعاة غنة الميم والنون المشددتين

# اللام الشمسية

| | | | |
|---|---|---|---|
| ٱلطَّيِّبَٰتُ<br>المائدة: ٤ | ٱلثَّمَرَٰتِ<br>البقرة: ٢٢ | ٱلصَّٰلِحَٰتِ<br>البقرة: ٢٥ | ٱلرَّحْمَٰنُ<br>البقرة: ١٦٣ |
| ٱلتَّوَّابُ<br>البقرة: ٣٧ | ٱلضَّأْنِ<br>الأنعام: ١٤٣ | ٱلذَّكَرُ<br>آل عمران: ٣٦ | ٱلنَّاسِ<br>البقرة: ٨ |
| ٱلدُّنْيَا<br>البقرة: ٨٦ | ٱلسَّلَٰمَ<br>النساء: ٩٤ | ٱلظُّلُمَٰتِ<br>المائدة: ١٦ | وَٱلزَّرْعَ<br>الأنعام: ١٤١ |
| ٱلشَّمْسُ<br>يس: ٤٠ | ٱللَّٰعِنُونَ<br>البقرة: ١٥٩ | لِلطَّيِّبَٰتِ<br>النور: ٢٦ | لِلصَّلَوٰةِ<br>الجمعة: ٩ |
| لِلذَّكَرِ<br>النساء: ١١ | لِلشَّمْسِ<br>فصلت: ٣٧ | لِلزَّكَوٰةِ<br>المؤمنون: ٤ | لِلسَّآئِلِ<br>الذاريات: ١٩ |

١. اللام الشمسية لام تكتب ولا تنطق وتدغم في الحرف الذي بعدها فيشدد وتكون هي عارية وحروفها: (ط – ث – ص – ر – ت – ض – ذ – ن – د – س – ظ – ز – ش – ل)

٢. التهجي: همزةُ وصلٍ (تسقطُ وصلًا) نبدأُ بها أَ – لام شمسية مدغمة في الطاء المفتوحة ٱلطَّ - ٱلطَّيِّ - بَ - ٱلطَّيِّبَ - ألف مد طبيعي حركتان ٱلطَّيِّبَٰ - تُ - ٱلطَّيِّبَٰتُ

٣. همزة الوصل قبل اللام الشمسية تسقط وصلًا ودائمًا البدء بها أَ وأحيانًا تسقط لفظًا وخطًا مثل: لِ - لام شمسية مدغمة في الطاء المفتوحة لِلطَّ - لِلطَّيِّ - بَ - لِلطَّيِّبَ - ألف مد طبيعي حركتان لِلطَّيِّبَٰ - تِ - لِلطَّيِّبَٰتِ

## تدريبات على إسقاط حروف المد وصلًا مع اللام القمرية والشمسية

| | | | |
|---|---|---|---|
| شَقَقۡنَا ٱلۡأَرۡضَ<br>عبس: ٢٦ | وَإِذَا ٱلۡبِحَارُ<br>التكوير: ٦ | مَا ٱلۡقَارِعَةُ<br>القارعة: ٢ | مَا ٱلطَّارِقُ<br>الطارق: ٢ |
| إِذَا ٱلشَّمۡسُ<br>التكوير: ١ | وَإِلَى ٱلۡجِبَالِ<br>الغاشية: ١٩ | عَلَى ٱلۡأَرَآئِكِ<br>المطففين: ٢٣ | عَلَى ٱلۡغَيۡبِ<br>التكوير: ٢٤ |
| يَصۡلَى ٱلنَّارَ<br>الأعلى: ١٢ | إِلَى ٱلسُّجُودِ<br>القلم: ٤٢ | ذِى ٱلۡعَرۡشِ<br>التكوير: ٢٠ | لَصَالُواْ ٱلۡجَحِيمِ<br>المطففين: ١٦ |
| وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ<br>البينة: ٧ | وَيُقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ<br>البينة: ٥ | وَيُؤۡتُواْ ٱلزَّكَوٰةَ<br>البينة: ٥ | |

١ . حرف المد المتبوع بلام قمرية أو شمسية يسقط وصلا منعا لالتقاء الساكنين.

٢ . يمكن الاقتصار على القراءة المباشرة مع توضيح سبب إسقاط الحروف

مثال: ( مـ – طَّ – مطَّ )

٣. مراعاة التركيز على القراءة المباشرة في نهاية الحصة.

# تدريبات على المد اللازم

| | | | |
|---|---|---|---|
| دَآبَّةٍ<br>النحل: ٤٩ | رَآدَّ<br>يونس: ١٠٧ | حَآدَّ<br>المجادلة: ٢٢ | كَآفَّةً<br>التوبة: ٣٦ |
| ٱلْحَآقَّةُ<br>الحاقة: ١ | رَآدُّوهُ<br>القصص: ٧ | بِرَآدِّى<br>النحل: ٧١ | تَتَّبِعَآنِّ<br>يونس: ٨٩ |
| خَآصَّةً<br>الأنفال: ٢٥ | يَتَمَآسَّا<br>المجادلة: ٣ | صَوَآفَّ<br>الحج: ٣٦ | صَٰٓفَّٰتٍ<br>النور: ٤١ |
| ٱلصَّآخَّةُ<br>عبس: ٣٣ | ءَآمِّينَ<br>المائدة: ٢ | تُشَٰٓقُّونَ<br>النحل: ٢٧ | حَآفِّينَ<br>الزمر: ٧٥ |
| تَحَٰٓضُّونَ<br>الفجر: ١٨ | لِيُحَآجُّوكُم<br>البقرة: ٧٦ | تَأْمُرُوٓنِّىٓ<br>الأنعام: ٨٠ | أَتُحَٰٓجُّوٓنِّى<br>الزمر: ٦٤ |

١. إذا وقع حرف مشدد بعد حرف مد يسمى مد لازم ومقداره ست حركات ويوضع فوقه علامة المد. وسبب المد هو السكون الموجود في بداية الحرف المشدد فيراعى نطق الحرف المشدد.

٢. التهجي: (دَ – ألف مد لازم (كلمي مثقل) ست حركات، باء شد ة وفتحة دَآبَّـ – تاء تنوين بالكسر دَآبَّةٍ ).

٣. المد اللازم الكلمي المثقل لم يقع إلا في الألف والواو ولم يقع في الياء.

# تدريبات قرآنية

إِنَّ هَٰذَا ٱلْقُرْءَانَ يَهْدِى لِلَّتِى هِىَ أَقْوَمُ

[الإسراء: ٩]

إِنِ ٱلْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقُصُّ ٱلْحَقَّ ۖ وَهُوَ خَيْرُ ٱلْفَٰصِلِينَ

[الأنعام: ٥٧]

فَإِذَا قَرَأْتَ ٱلْقُرْءَانَ فَٱسْتَعِذْ بِٱللَّهِ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ ٱلرَّجِيمِ

[النحل: ٩٨]

إِنَّ وَلِـِّۧىَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى نَزَّلَ ٱلْكِتَٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى ٱلصَّٰلِحِينَ

[الأعراف: ١٩٦]

ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَجَعَلَ ٱلظُّلُمَٰتِ وَٱلنُّورَ

[الأنعام: ١]

فَٱسْتَبِقُوا۟ ٱلْخَيْرَٰتِ ۚ أَيْنَ مَا تَكُونُوا۟ يَأْتِ بِكُمُ ٱللَّهُ جَمِيعًا

[البقرة: ١٤٨]

وَتَعَاوَنُوا۟ عَلَى ٱلْبِرِّ وَٱلتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا۟ عَلَى ٱلْإِثْمِ وَٱلْعُدْوَٰنِ

[المائدة: ٢]



# التشديد مع التنوين

| | | |
|---|---|---|
| رَبًّا رَبٍّ رَبٌّ | مَتًّا مَتٍّ مَتٌّ | بَثًّا بَثٍّ بَثٌّ |
| فَجًّا فَجٍّ فَجٌّ | لَحًّا لَحٍّ لَحٌّ | فَخًّا فَخٍّ فَخٌّ |
| صَدًّا صَدٍّ صَدٌّ | فَذًّا فَذٍّ فَذٌّ | ضُرًّا ضُرٍّ ضُرٌّ |
| أَزًّا أَزٍّ أَزٌّ | بَسًّا بَسٍّ بَسٌّ | هَشًّا هَشٍّ هَشٌّ |
| نَصًّا نَصٍّ نَصٌّ | أَضًّا أَضٍّ أَضٌّ | أَطًّا أَطٍّ أَطٌّ |
| حَظًّا حَظٍّ حَظٌّ | دَعًّا دَعٍّ دَعٌّ | أَغًّا أَغٍّ أَغٌّ |
| صَفًّا صَفٍّ صَفٌّ | حَقًّا حَقٍّ حَقٌّ | شَكًّا شَكٍّ شَكٌّ |
| كُلًّا كُلٍّ كُلٌّ | صُمًّا صُمٍّ صُمٌّ | ظَنًّا ظَنٍّ ظَنٌّ |
| أَهًّا أَهٍّ أَهٌّ | تَوًّا تَوٍّ تَوٌّ | حَيًّا حَيٍّ حَيٌّ |

التهجي: (رَ – باء شدة تنوين بالفتح رَبًّا) (رَ – باء شدة تنوين بالكسر رَبٍّ)
(رَ – باء شدة تنوين بالضم رَبٌّ) (رَبًّا – رَبٍّ – رَبٌّ)



# تدريب ١

| | | | |
|---|---|---|---|
| حُبًّا<br>البقرة: ١٦٥ | دَعًّا<br>الطور: ١٣ | فَظًّا<br>آل عمران: ١٥٩ | حَظًّا<br>آل عمران: ١٧٦ |
| وَدًّا<br>نوح: ٢٣ | ضِدًّا<br>مريم: ٨٢ | سَدًّا<br>يس: ٩ | دَكًّا<br>الفجر: ٢١ |
| ضَرًّا<br>المائدة: ٧٦ | سِرًّا<br>الرعد: ٢٢ | شَرًّا<br>الزلزلة: ٨ | صَفًّا<br>الصف: ٤ |
| حَقًّا<br>البقرة: ٢٣٦ | شَقًّا<br>عبس: ٢٦ | ظِلًّا<br>النساء: ٥٧ | غَيًّا<br>مريم: ٥٩ |
| صَبِيًّا<br>مريم: ١٢ | تَقِيًّا<br>مريم: ١٣ | سَوِيًّا<br>مريم: ١٠ | وَأَبًّا<br>عبس: ٣١ |
| مَرْجُوًّا<br>هود: ٦٢ | ظِهْرِيًّا<br>هود: ٩٢ | ظَنًّا<br>يونس: ٣٦ | وَصُمًّا<br>الإسراء: ٩٧ |

التركيز في هذه التدريبات على القراءة المباشرة.

# تدريب ٢

| | | | |
|---|---|---|---|
| عُلُوًّا<br>الإسراء: ٤ | عَفُوًّا<br>النساء: ٤٣ | عَدُوًّا<br>البقرة: ٩٧ | طَرِيًّا<br>النحل: ١٤ |
| خَفِيًّا<br>مريم: ٣ | شَقِيًّا<br>مريم: ٤ | رَضِيًّا<br>مريم: ٦ | نَجِيًّا<br>مريم: ٥٢ |
| عِتِيًّا<br>مريم: ٦٩ | وَعَشِيًّا<br>مريم: ١١ | غُزًّى<br>آل عمران: ١٥٦ | مُسَمًّى<br>الأنعام: ٦٠ |
| غِلٍّ<br>الحج: ٢٧ | رَقٍّ<br>الطور: ٣ | شَكٍّ<br>يونس: ٩٤ | حَظٍّ<br>القصص: ٧٩ |
| مَرَدٍّ<br>الشورى: ٤٤ | حَيٍّ<br>المائدة: ١١٦ | بِضُرٍّ<br>الأنعام: ١٧ | بِشَرٍّ<br>المائدة: ٦٠ |
| أُفٍّ<br>الأعراف: ٤٣ | وَلِكُلٍّ<br>النساء: ٣٣ | فَجٍّ<br>الأحقاف: ١٧ | بِغَمٍّ<br>آل عمران: ١٥٣ |
| عُتُوٍّ<br>الملك: ٢١ | عَدُوٍّ<br>النساء: ٩٢ | عَرَبِيٍّ<br>الشعراء: ١٩٥ | بِحَقٍّ<br>الأنبياء: ٣٠ |

# تدريب ٣

| | | | |
|---|---|---|---|
| لِنَبِيٍّ<br>البقرة: ٢٤٦ | لِمُسْتَقَرٍّ<br>يس: ٣٨ | خَفِيٍّ<br>الشورى: ٤٥ | وَعَبْقَرِيٍّ<br>الرحمن: ٧٦ |
| وَلِيٍّ<br>البقرة: ١٠٧ | لِكُلٍّ<br>المائدة: ٤٨ | لُجِّيٍّ<br>النور: ٤٠ | مُسْتَمِرٍّ<br>القمر: ١٩ |
| وَرَبٌّ<br>سبأ: ١٥ | وَصَدٌّ<br>البقرة: ٢١٧ | شَرٌّ<br>البقرة: ٢١٦ | ضُرٌّ<br>الروم: ٣٣ |
| أَشَرٌّ<br>الجن: ١٠ | أَحَقٌّ<br>يونس: ٥٣ | كُلٌّ<br>البقرة: ١١٦ | فَطَلٌّ<br>البقرة: ٢٦٥ |
| شَكٌّ<br>إبراهيم: ١٠ | حِلٌّ<br>المائدة: ٥ | صُمٌّ<br>الأنعام: ٣٩ | جَآنٌّ<br>الرحمن: ٧٤ |
| دُرِّيٌّ<br>النور: ٣٥ | عَدُوٌّ<br>البقرة: ١٦٨ | عَرَبِيٌّ<br>النحل: ١٠٣ | لَعَفُوٌّ<br>المجادلة: ٢ |
| لَغَوِيٌّ<br>القصص: ١٨ | حَفِيٌّ<br>الأعراف: ١٨٧ | غَنِيٌّ<br>البقرة: ٢٦٣ | أَعْجَمِيٌّ<br>النحل: ١٠٣ |

# تدريبات على المشدد الموقوف عليه

| | | | |
|---|---|---|---|
| وَتَبَّ<br>المسد: ١ | مِتُّ<br>مريم : ٢٣ | بَثَّ<br>الشورى: ٢٩ | فَجٍّ<br>الحج : ٢٧ |
| ٱلشُّحَّ<br>النساء : ٢٨ | أَشُدُّ<br>البقرة : ٧٤ | وَتَلَذُّ<br>الزخرف: ٧١ | وَأَمَرُّ<br>القمر : ٤٦ |
| وَتُعِزُّ<br>آل عمران : ٢٦ | مَسَّ<br>يونس : ١٢ | وَأَهُشُّ<br>طه : ١٨ | نَقُصُّ<br>الأعراف: ١٠١ |
| يَعَضُّ<br>الفرقان : ٢٧ | حَظٍّ<br>القصص : ٧٩ | يَدُعُّ<br>الماعون : ٢ | صَوَآفَّ<br>الحج : ٣٦ |
| أَحَقُّ<br>يونس : ٣٥ | شَكٍّ<br>النساء : ١٥٧ | فَطَلٌّ<br>البقرة : ٢٦٥ | بِغَمٍّ<br>آل عمران : ١٥٣ |
| جَآنٌّ<br>الرحمن: ٣٩ | يُوَجِّهه<br>النحل : ٧٦ | عَدُوٌّ<br>البقرة: ١٦٨ | نَبِيٍّ<br>الحج : ٥٢ |

يلاحظ أنه عند الوقف على حرف مشدد تختلف طريقة النطق عن الوقف على حرف غير مشدد مثل ( وَتَبَّ – كَسَبَ ) ( جَآنٌّ – فَانٍ ) ( وَأَمَرُّ – أَمَرَ )

والتهجي : (فَـ – طَ – فَطَ – لام حرف مشدد موقوف عليه فَطَلٌّ )

(بِـ – غَـ – بِغَـ – ميم حرف مشدد موقوف عَلَيه بغنة حركتين بِغَـمٍّ )

(وَ – تَـ – وَتَـ – باء حرف مشدد موقوف عَلَيه مع القلقلة وَتَبَّ )

# تدريبات قرآنية

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَهَدَ عَلَيۡهُ ٱللَّهَ | فَكِهِينَ | إِۦلَٰفِهِمۡ | يُبۡدِلَنَا |
| ٱلَّذِي يُوَسۡوِسُ | لَيَصۡرِمُنَّهَا | مِرۡصَادٗا | وُجۡدِكُمۡ |
| وَإِنَّهُۥ لِحُبِّ | سَنُقۡرِئُكَ | عِلِّيِّينَ | وَتَعِيَهَآ |
| مَنِ ٱرۡتَضَىٰ | يُوفِضُونَ | ٱلنَّعۡمَةِ | تَطَّلِعُ |
| فَيُحۡفِكُمۡ | جِمَٰلَتٞ | لَتَرَوُنَّ | لَوَّوۡاْ |
| لَيُزۡلِقُونَكَ | نُتۡبِعُهُمُ | لِإِيلَٰفِ | يَدَيِ |
| يُبَايِعُونَكَ | لِيُطۡفِـُٔواْ | كُفُوًا | ذَوَىٰ |
| بِشَهَٰدَٰتِهِمۡ | لِّلۡمُقۡوِينَ | فَأَتَىٰهُمُ | وَأَلَّوِ |
| أَتَعِدَانِنِيٓ | يُنَشَّؤُاْ | نَتَّبِعۡكُمۡ | مِمَّ |
| وَلِيُوَفِّيَهُمۡ | وَقِيلِهِۦ | هُزُوٗا | فِيمَ |

كلمة: ( فِيمَ )، ( مِمَّ ) يراعى فتح الميم بمقدار حركة واحدة حتى لا يتولد حرف مد.

كلمة: ( فَكِهِينَ ) يراعى فتح الفاء بدون مد.

كلمة: ( كُفُوًا ) الحرص على ضم الفاء حتى لا تنطق ساكنة.

مراعاة تفخيم الراء في ( مِرۡصَادٗا – مَنِ ٱرۡتَضَىٰ ).

مراعاة كسر الياء الثانية في ( يُبَايِعُونَكَ ) وكسر اللام في ( وَلِيُوَفِّيَهُمۡ ).

| | | | |
|---|---|---|---|
| لَا تَجْـَٔرُوا۟ ٱلْيَوْمَ | فَصُرْهُنَّ | وَلَيتِهِم | وَهُوَ |
| لِيَسْتَفِزُّونَكَ | فَذَٰنِكَ | وَأَذَٰنٌ | وَأُتُوا۟ |
| بِمُصْرِخِكُمْ | وَرَجِلِكَ | ءَآلْـَٰٔنَ | أُوتُوا۟ |
| يُغْنِيَهُمُ ٱللَّهُ | وَلْيَتَلَطَّفْ | ءَآمِّينَ | دَعَوُا۟ |
| يَصَّدَّعُونَ | خُطُوَٰتِ | لَأَتَوْهَا | ذُلُلًا |
| أَنُلْزِمُكُمُوهَا | أَوَعَظْتَ | عِطْفِهِۦ | رُّبَمَا |
| وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ | ءَاذَنَّكَ | ٱلْوَدْقَ | ٱلرُّبُعُ |
| نَضْطَرُّهُمْ | وَلِيُمَحِّصَ | ذَوَاتَىْ | ٱلسَّبُعُ |
| ءَآلذَّكَرَيْنِ | يَلْتَقِطْهُ | وَٱلْغَوْا۟ | فَقَعُوا۟ |
| أَفَضْتُمْ | أَتُمِدُّونَنِ | فَأُوَٰرِىَ | وَيَعْفُوا۟ |
| فَيَرْكُمَهُۥ | فَلَنُنَبِّئَنَّ | يَبْنَؤُمَّ | وَيَعْفُ |
| ٱلْأَوَّلِينَ | بِمَلْكِنَا | تُرِيَنِّى | وُۥرِىَ |
| لَنُبَوِّئَنَّهُم | وَيْكَأَنَّ | فَزَيَّلْنَا | يَهِدِّىٓ |
| ٱلْوُسْطَىٰ | يَتَّبِعُهُمْ | لَتَأْتُنَّنِى | يَـُٔودُهُۥ |

# تدريبات قرآنية على حالات الحروف

وَهُوَ ٱللَّهُ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَفِي ٱلْأَرْضِ ۖ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ

[الأنعام: ٣]

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ ٱلْقَصَصِ بِمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ هَٰذَا ٱلْقُرْءَانَ

[يوسف: ٣]

وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ وَأَطِيعُوا۟ ٱلرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

[النور: ٥٦]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱصْبِرُوا۟ وَصَابِرُوا۟ وَرَابِطُوا۟ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

[آل عمران: ٢٠٠]

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ ٱلَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۘ وَٱلْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ ٱللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ

[الأنعام: ٣٦]

يُثَبِّتُ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱلْقَوْلِ ٱلثَّابِتِ فِي ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَفِي ٱلْءَاخِرَةِ

[إبراهيم: ٢٧]

ءَاخِذِينَ مَآ ءَاتَىٰهُمْ رَبُّهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَبْلَ ذَٰلِكَ مُحْسِنِينَ

[الذاريات: ١٦]

وَٱلَّذِينَ يُمَسِّكُونَ بِٱلْكِتَٰبِ وَأَقَامُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُصْلِحِينَ

[الأعراف: ١٧٠]

فَـَٔاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ ثَوَابَ ٱلدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ ٱلْـَٔاخِرَةِ ۗ وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلْمُحْسِنِينَ

[آل عمران: ١٤٨]

وَأَمَّا ٱلَّذِينَ ٱبْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِى رَحْمَةِ ٱللَّهِ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ

[آل عمران: ١٠٧]

رَبَّنَا ٱغْفِرْ لِى وَلِوَٰلِدَىَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ ٱلْحِسَابُ

[إبراهيم: ٤١]

رَبَّنَا وَءَاتِنَا مَا وَعَدتَّنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۗ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ ٱلْمِيعَادَ

[آل عمران: ١٩٤]

وَقُلْ جَآءَ ٱلْحَقُّ وَزَهَقَ ٱلْبَٰطِلُ ۚ إِنَّ ٱلْبَٰطِلَ كَانَ زَهُوقًا

[الإسراء: ٨١]

ذَٰلِكَ ٱلْفَضْلُ مِنَ ٱللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ عَلِيمًا

[النساء: ٧٠]

جَ حَ خَ

| | | | |
|---|---|---|---|
| جـ | جَ - جَ - جَجَ | جَ - حَ - جَحَ | جَ - خَ - جَخَ |
| حـ | حَ - جَ - حَجَ | حَ - حَ - حَحَ | حَ - خَ - حَخَ |
| خـ | خَ - جَ - خَجَ | خَ - حَ - خَحَ | خَ - خَ - خَخَ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| أَ | أَأَ | أَبَ | أَتَ | أَثَ | أَجَ | أَحَ | أَخَ |
| بَ | بَأَ | بَبَ | بَتَ | بَثَ | بَجَ | بَحَ | بَخَ |
| تَ | تَأَ | تَبَ | تَتَ | تَثَ | تَجَ | تَحَ | تَخَ |
| ثَ | ثَأَ | ثَبَ | ثَتَ | ثَثَ | ثَجَ | ثَحَ | ثَخَ |
| جَ | جَأَ | جَبَ | جَتَ | جَثَ | جَجَ | جَحَ | جَخَ |
| حَ | حَأَ | حَبَ | حَتَ | حَثَ | حَجَ | حَحَ | حَخَ |
| خَ | خَأَ | خَبَ | خَتَ | خَثَ | خَجَ | خَحَ | خَخَ |